(٢٣) سورة المؤمنون مكية وآياتها ١١٨ نزلت بعد الأنبياء

بسم الله الرحمن الرحيم

سورة مكية ، وآياتها مائة وثمان عشرة آية ، ابتدأت بإثبات الفلاح للمؤمنين ، وأتبعت ذلك ببيان صفاتهم . ثم ذكرت أصل خلق الإنسان ، وتطور أصله ، وتسلسل سلالاته ، وبعض مظاهر قدرة الله تعالى ، وعقبت ذلك بقصص الأنبياء المردفة باتحاد الرسالات ووحدة الإنسان ، وإن اختلف الناس إلى معترف ومنحرف ، ووصفت طالب الهدى وصاحب الضلال ، وبيّنت موقف المشركين من النبى ﷺ ، وانتقلت من ذلك إلى مظهر قدرة الله فى إحكام خلق الإنسان ، وأخذ سبحانه فيها يسأل الناس ليجيبوه ــ بفطرهم ــ بما يقرر وجوده ، ويثبت ألوهيته ، ثم بيّنت السورة أحوال الناس فى القيامة ، وأنهم سيحاسبون ، ويؤخذون بالعدل ، وتختم السورة ببيان جلاله ــ سبحانه وتعالى ــ وتنبيه رسوله إلى طلب المغفرة والرحمة من أرحم الراحمين :

(23) АЛЬ-МУ'МИНУН

(Мекканская сура)

ВЕРУЮЩИЕ

Во имя Аллаха Милостивого, Милосердного!

Эта сура ниспослана в Мекке. Она состоит из 118 айатов. Сура начинается с вести о том, что верующие восторжествуют и будут счастливы. Затем разъясняется, какие свойства характеризуют верующих. Далее рассказывается о процессе сотворения человека и развитии этого творения.

В суре приводятся некоторые явления, подтверждающие могущество Аллаха Всевышнего, а также приводятся истории пророков, указывающие на единство всех Посланий о единобожии и на то, что все люди похожи во всех поколениях, хотя и делятся на исповедующих веру и отказывающихся от истинной веры.

В суре описывается тот, кто стремится к руководству к прямому пути, и тот, кто направляется к заблуждению. Далее говорится об отношении многобожников к пророку Мухаммаду - да благословит его Аллах и приветствует!

Затем в суре разъясняется, как Аллах сотворил человека в совершенном виде, что является доказательством Его могущества. Аллах спрашивает людей, не видят ли они в этом знамения, подтверждающего Его существование и Божественность.

Далее говорится, каково будет состояние людей в Судный день, когда Аллах их рассудит и справедливо воздаст им за их деяния.

Сура заканчивается подтверждением величия Аллаха - хвала Ему! - и что Он превыше всего.

В конце суры Аллах советует посланнику (Мухаммаду) - да благословит его Аллах и приветствует! - просить прощения и милости у Аллаха - лучшего из милосерднейших!

قَدْ أَفْلَحَ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ ٱلَّذِينَ هُمْ فِى صَلَاتِهِمْ خَٰشِعُونَ ﴿٢﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ عَنِ ٱللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾
وَٱلَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَوٰةِ فَٰعِلُونَ ﴿٤﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَٰفِظُونَ ﴿٥﴾ إِلَّا عَلَىٰٓ أَزْوَٰجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَٰنُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾ فَمَنِ ٱبْتَغَىٰ وَرَآءَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْعَادُونَ ﴿٧﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِأَمَٰنَٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رَٰعُونَ ﴿٨﴾

١ - تحقق الفلاح للمؤمنين بالله وبما جاءت به الرسل ، وفازوا بأمانيهم .

٢ - الذين ضموا إلى إيمانهم العمل الصالح ، هم فى صلاتهم متوجهون إلى الله بقلوبهم خائفون منه متذللون له ، يَخشُون بالخضوع المطلق له .

٣ - هم مؤثرون للجد ، معرضون عمَّا لاخير فيه من قول وعمل .

٤ - وهم محافظون على أداء الزكاة إلى مستحقيها ، وبذلك يجمعون بين العبادات البدنية والعبادات المالية ، وبين تطهير النفس وتطهير المال(١) .

٥ - وهم يحافظون على أنفسهم من أن تكون لها علاقة بالنساء(٢) .

٦ - إلا بطريق الزواج الشرعى أو بملكية الجوارى(٣) فلا مؤاخذة عليهم فيه .

٧ - فمن أراد الاتصال بالمرأة عن غير هذين الطريقين فهو متعد للحدود المشروعة غاية التعدى .

٨ - وهم محافظون على كل ما ائتمنوا عليه من مال ، أو قول ، أو عمل ، أو غير ذلك ، وعلى كل عهد بينهم وبين الله أو بينهم وبين الناس ، فلا يخونون الأمانات ولا ينقضون العهود .

---

(١) ﴿ والذين هم للزكاة فاعلون ﴾ : هدفت فريضة الزكاة إلى توثيق الروابط الاجتماعية بين المسلمين ، وإشعار كل فرد منهم بأنه مسئول عن أخيه ، يحس بإحساسه ، ويتألم لألمه ، فيعمل ما استطاع ليقيه نائبات الزمان ومرارة الحرمان ، فلا يحقد فقير أو مسكين على غنى ، بل يشعر الجميع بأنهم أسرة واحدة متعاونة مُعتصمة بحبل الله ، ولا ييأس مدين من أن يعطى ما يفى به دينه إذا كان لا يملك ما يوفى به هذا الدين .. ولا توهن عزيمة غاز فى سبيل الله لنصرة دينه وتحرير وطنه حاجة إلى مال يعينه على تحقيق غايته ، ولا يعدم مسافر أو غريب محتاج أو منقطع عن ماله مَنْ يبذل له نفقة يستعين بها حتى يصل إلى وطنه . والزكاة بجانب هذا كله كانت وسيلة من الوسائل الفعالة التى اتخذها الإسلام لفك الرقاب وإلغاء الرق ، ولقد توسع الإسلام فى تحقيق أهدافه الاجتماعية العالمية ، ونبذ التعصب الدينى الممقوت ، فأباح أن يعطى الكفار من الزكاة إذا دعت الحاجة إلى إستئلافهم ، وكذلك العاملون عليها ، والمكاتبون ، وأبناء السبيل والغارمون لإصلاح ذات البين ، والذين يعاونون المسلمين فى قتال . أما الهدف الاقتصادى للزكاة فهو القضاء على الفقر أينما حل ، ومعاونة كل ذى حاجة على النحو الذى تقدم .

(٢) ﴿ والذين هم لفروجهم حافظون . إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين . فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ﴾ : تتصل هذه الآيات بآيات أخرى فى سورة النور أولها : ﴿ الزانية والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة ﴾ .. إن الآيات الكريمة المذكورة تشير إلى ما ينتج عن الزنا من آثار اجتماعية ضارة .. أما الناحية الاجتماعية فيؤدى الزنا إلى اختلاط الأنساب . كما أنه من الناحية الطبية ينقسم تأثير الزنا إلى ناحيتين :

الأولى : هى الناحية الجسمانية وما ينتج عنها ، مثل السيلان والزهرى والقرحة والزفرة ، ومن مضاعفاتها أن السيلان ينتهى بمضاعفات بولية تناسلية ، أو مفصلية أو رمدية قد ينتج عنها فقد الإبصار ، أما الزهرى فينتشر فى الجسم كله ويصيب الأنسجة والشرايين والجهاز العصبى ، وقد ينتهى بصاحبه إلى الجنون ، كما يؤثر على النسل ، فيموت الجنين أو يشوه .

الثانية : التأثير العصبى . فإن الزناة منهم مَن قد يصاب بتأنيب الضمير والشعور بالإثم ، وفى النهاية يصاب بانهيار عصبى ، ومن كثرة الإفراط قد يؤدى به إلى طريق الجنون .

(٣) كان الرق فى الماضى ثابتا ، وكان للرجل أن يصطفى منْ جواريه من يتخذها كزوجة ، والإسلام أباح الرق فى القتال المشروع إذا كان الأعداء يسترقون من قبيل المعاملة بالمثل ، فإن لم يسترق الأعداء فإن المسلمين لا يسترقون .

1. Преуспели верующие в Аллаха и Его Послания, передаваемые посланниками! Исполнились их надежды!

2. Это - те, которые присоединили к своей вере добрые деяния, в сердцах своих обращались к Аллаху с молитвами и богобоязненностью и выражали полное послушание Ему,

3. которые предпочитают усердие, избегают недобрых деяний и слов,

4. которые регулярно раздают закят (очистительную подать) тому, кто её заслуживает. Таким образом они выполняют ритуальные и денежные обряды ислама, очищая свои души и деньги,

5. которые оберегают себя от незаконных связей с женщинами,

6. ограничиваясь своими жёнами и рабынями*. За это они не будут порицаемы.

7. Те же, которые возжелают иметь связь с женщиной другими путями, невзирая на запрещение, далеко преступают дозволенные шариатом пределы.

8. (Верующие - те), которые сохраняют доверенное им имущество, тайны и т.п., а также соблюдают все свои доверенности, обещания и договоры между собой и между Аллахом, между собой и людьми,

---

* Раньше люди имели рабов и рабынь, и мужчина мог избрать себе жену из рабынь. При исламе рабами могли быть только враги, захваченные в плен, при условии, что враг перед этим захватил в плен мусульман, иначе мусульмане не делали врагов рабами.

وَٱلَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَٰتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْوَٰرِثُونَ ﴿١٠﴾ ٱلَّذِينَ يَرِثُونَ ٱلْفِرْدَوْسَ هُمْ
فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن سُلَٰلَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنَٰهُ نُطْفَةً فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ
خَلَقْنَا ٱلنُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا ٱلْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا ٱلْمُضْغَةَ عِظَٰمًا فَكَسَوْنَا ٱلْعِظَٰمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَٰهُ خَلْقًا
ءَاخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ ٱلْخَٰلِقِينَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

٩ - وهم مداومون على أداء الصلاة فى أوقاتها ، محققون لأركانها وخشوعها ، حتى تؤدى إلى المقصود منها ، وهو الانتهاء عن الفحشاء والمنكر .

١٠ - هؤلاء الموصوفون هم الذين يرثون الخير كله ، وينالونه يوم القيامة .

١١ - هم الذين يتفضل الله عليهم بالفردوس أعلى مكان فى الجنة ، يتمتعون فيه دون غيرهم .

١٢ - وإن على الناس أن ينظروا إلى أصل تكوينهم ، فإنه من دلائل قدرتنا الموجبة للإيمان بالله وبالبعث ، فإننا خلقنا الإنسان من خلاصة الطين .

١٣ - ثم خلقنا نسله فجعلناه نطفة - أى ماء فيه كل عناصر الحياة الأولى - تستقر فى الرحم وهو مكان مستقر حصين .

١٤ - ثم صيَّرنا هذه النطفة بعد تلقيح البويضة والإخصاب دما . ثم صيَّرنا الدم بعد ذلك قطعة لحم ، ثم صيرناها هيكلا عظميا ، ثم كسونا العظام باللحم ، ثم أتممنا خلقه فصار فى النهاية بعد نفخ الروح فيه خلقا مغايرا لمبدأ تكوينه ، فتعالى شأن الله فى عظمته وقدرته ، فهو لا يشبهه أحد فى خلقته وتصويره وإبداعه .

١٥ - ثم إنكم ــ يا بنى آدم ــ بعد ذلك الذى ذكرناه من أمركم صائرون إلى الموت لا محالة .

١٦ - ثم إنكم تبعثون يوم القيامة للحساب والجزاء .

9. которые регулярно соблюдают часы обрядовых молитв, совершая их тщательно и смиренно, чтобы достичь цели молитвы - очиститься от великих и малых грехов,

10. именно эти верующие наследуют всё блаженство в Судный день - День расчёта и воздаяния.

11. Аллах им дарует "аль-фирдаус" - лучшее место в раю, в котором они вечно будут наслаждаться блаженством.

12. Люди должны посмотреть, как человек был сотворён изначально. Одно из знамений Нашего могущества, которое обязывает к вере в Аллаха и в воскресение,- сотворение Нами человека из эссенции глины.

13. Потом Мы сотворили его потомство из "нотфи" (капли, содержащей все элементы первоначальной жизни) и поместили это в надёжном месте - в матке.

14. Потом Мы превратили каплю семени в сгусток крови, а кровавый сгусток - в кусок мяса, который обратили в кости и облекли кости мясом. Мы завершили творение человека, вдохнув в него Дух, и он стал совершенно другим творением по сравнению с началом. Благословен Аллах Всемогущий Своим величием и мощью! Никто не может сравниться с Ним в умении творить, созидать, формировать.

15. И вы, сыновья Адама, после всего, что Мы рассказали о вашем сотворении, непременно умрёте.

16. Потом вы будете воскрешены в День воскресения для расчёта и воздаяния.

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ
فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا
فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْآكِلِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنَّ لَكُمْ
فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

١٧ - وإننا قد خلقنا سبع سموات مرتفعة فوقكم . فيها مخلوقات لم نغفل عنها فحفظناها ، ودبَّرناها ، ونحن لا نغفل عن جميع المخلوقات ، بل نحفظها كلها من الزوال والاختلال ، ونُدبِّر كل أمورها بالحكمة(١) .

١٨ - وأنزلنا من السماء مطرا بحكمة وتقدير فى تكوينه وإنزاله ، وتيسيرا للانتفاع به جعلناه مستقرا فى الأرض على ظهرها وفى جوفها ، وإنا لقادرون على إزالته وعدم تمكينكم من الانتفاع به ، ولكنا لم نفعل رحمة بكم ، فآمنوا بخالقه واشكروه(٢) .

١٩ - فخلقنا لكم بهذا الماء حدائق من نخيل وأعناب لكم فيها فواكه كثيرة ، ومنها تأكلون .

٢٠ - وخلقنا لكم شجرة الزيتون التى تنبت فى منطقة طور سيناء ، وفى ثمارها زيت تنتفعون به ، وهو إدام للآكلين(٣) .

٢١ - وإن لكم فى الأنعام وهى الإبل والبقر والغنم ما يدل على قدرتنا وتفضلنا عليكم بالنعم ، نسقيكم لبنا مستخرجا مما فى بطونها خالصا سائغا سهلا للشاربين ، ولكم فيها سوى اللبن منافع كثيرة كاللحوم والأصواف والأوبار ومنها تعيشون وترزقون .

٢٢ - وعلى هذه الأنعام وعلى السفن تركبون وتحملون الأثقال ، فخلقنا لكم وسائل الانتقال والحمل فى البر والبحر ، وبها يكون الاتصال بينكم .

---

(١) ﴿ ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين ﴾ ، الطرائق السبع فى الآية كناية عن عدد السموات ، وأنها ليست بسماء واحدة ، وهو - عز وجل - لا يغفل عن هذه السموات وما فيها من خلق .

(٢) ﴿ وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض ، وإنا على ذهاب به لقادرون ﴾ : تشير هذه الآية الكريمة إلى معان علمية خاصة بالدورة المائية فى الأرض ، فمن المعلوم أن عمليات البخر من المحيطات والبحار تنشأ عنها إثارة السحب التى ينزل منها المطر الذى هو أساس المياه العذبة على سطح الأرض والعنصر الأساسى للحياة عليها ، ومن الأمطار تفيض الأنهار التى تهب الحياة للمناطق القاحلة والنائية ، ثم هى أخيرا تصب فى البحار ، وتعيد الطبيعة الكرّة من البحر إلى الجو إلى البر ثم إلى البحر ثانية .. غير أن بعض مياه الأمطار فى أثناء هذه الدورة الطبيعية يتسرب إلى باطن القشرة الأرضية مكونا المياه الجوفية التى ينتقل فيها من مكان إلى آخر ، وكثيرا ما تستقر وتظل مختزنة فى أحواض تركيبية شاسعة تحت السطح تفيدها فى مكانها آمادا طويلة ، كتلك التى توجد تحت الصحراء الغربية الليبية ، والتى كشفت البحوث الحديثة عن أصلها القديم ، وقد تعترى مثل هذه التراكيب الجيولوجية الخازنة تغيرات حرارية يسميها العلماء بالثورات الجيولوجية ، فتذهب بها وما بها من ماء إلى أمكنة أخرى قاحلة ، فتحييها بعد موتها .

وتشير هذه الآية إلى الحكمة العالية فى توزيع الماء بقدر أى بتقدير لائق حكيم ، لاستجلاب المنافع ودفع المضار .. وَثَمَّ معنى آخر للآية الكريمة يفيد أن مشيئة الخالق - جل وعلا - اقتضت أن يسكن فى الأرض كمية معلومة من المياه فى محيطاتها وبحارها=

17. Мы установили над вами семь небес, в которых находятся создания, которыми Мы не пренебрегали, а хранили. Мы не пренебрегали Своими созданиями, а оберегали их от гибели. Ведь Аллах Своей мудростью руководит всеми их делами.

18. Мы низвели с неба воду соразмерно по количеству и составу, чтобы было легко пользоваться ею. Мы поместили её на поверхности и в недрах земли, но в Наших силах вывести её оттуда так, что ею нельзя будет пользоваться. Мы пощадили вас и не сделали этого. Так уверуйте в Творца и будьте Ему благодарны!

19. Мы вырастили вам с помощью этой воды пальмовые, виноградные и другие сады, в которых для вас много плодов и фруктов, чтобы вы питались ими.

20. На горе Синай Мы вырастили для вас оливковое дерево. В его плодах масло, которым вы пользуетесь, и оно для вкушающих - особая снедь.

21. В скоте - верблюдах, коровах, овцах - для вас есть назидание, доказывающее Нашу мощь и то, что Мы даруем вам благо. Мы поим вас молоком из их утроб, приятным и лёгким для питья. Кроме молока, в них для вас ещё много пользы: мясо, которое вы едите, шерсть и пух, которые вы употребляете в жизни и получаете от них средства к существованию.

22. В добавление к этим благам вы ездите на этих животных и на кораблях и перевозите на них грузы. Так Мы создали для вас средства передвижения и перевозки грузов на земле и на море, и при помощи их вы осуществляете связь между вами.

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦ فَقَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ ٱلْمَلَؤُا۟ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ مَا هَٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَأَنزَلَ
مَلَٰٓئِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِىٓ ءَابَآئِنَا ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌۢ بِهِۦ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا۟ بِهِۦ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ
ٱنصُرْنِى بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾ فَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ أَنِ ٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ ٱلتَّنُّورُ ۙ فَٱسْلُكْ فِيهَا

٢٣ - وفى قصص الأولين عبرة لكم لتؤمنوا ، فقد أرسلنا نوحا إلى قومه ، فقال لهم : يا قوم اعبدوا الله - وحده - فليس لكم إله يستحق العبادة غيره ، ألا تخافون عقابه ، وزوال نعمه إن عصيتم ؟ .

٢٤ - فقال الكبراء من قومه الذين كفروا منكرين لدعوته صادّين العامة عن اتباعه : لا فرق بين نوح وبينكم ، فهو مثلكم فى البشرية ، ولكنه يريد أن يتميز عليكم بهذه الدعوة ، ولو كان هناك رسل من الله - كما يزعم - لأرسلهم ملائكة . ما سمعنا فى تاريخ آبائنا السابقين بهذه الدعوة ولا بإرسال بشر رسولا .

٢٥ - ما هو إلا رجل به جنون ، ولذلك قالوا : فانتظروا واصبروا عليه حتى ينكشف جنونه ، أو يحين هلاكه .

٢٦ - دعا نوح ربه بعد ما يئس من إيمانهم ، فقال : يا رب انصرنى عليهم ، وانتقم منهم بسبب تكذيبهم لدعوتى .

= تكفى لحدوث التوازن الحرارى المناسب فى هذا الكوكب ، وعدم وجود فروق عظيمة بين درجات حرارة الصيف والشتاء لتلائم الحياة ، كما فى بعض الكواكب والتوابع ، كالقمر .. كما أن مياه الأرض أنزلت بقدر معلوم لا يزيد فيغطى كل سطحها ، ولا يقل فيقصر دون رى الجزء البرى منها .

(٣) ﴿ وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين ﴾ : تقرر هذه الآية الكريمة أن شجرة الزيتون من ضمن النعم التى أنعم الله بها على الإنسان ، وعدد بعضها فى الآيات السابقة واللاحقة لهذه الآية إذ أنها من الأشجار الخشبية التى تعمر طويلا لمدد تزيد على مئات السنين ، فلا يأخذ أمرها جهدا من الإنسان إنما تثمر أثمارا مستمرة طبيعية .. كما تتميز بأنها دائمة الخضرة جميلة المنظر . وتفيد الأبحاث العلمية أن الزيتون يعتبر مادة غذائية جيدة ، ففيه نسبة كبيرة من البروتين ، كما تتميز بوجود الأملاح الكلسية والحديدية والفسفورية ، وهى مواد هامة وأساسية فى غذاء الإنسان ، وعلاوة على ذلك فإن الزيتون يحتوى على فيتامين « أ » وفيتامين « ب » ، ويستخرج من الثمار زيت الزيتون الذى يحتوى على نسبة عالية من الدهون السائلة ، وهذا الزيت يستعمل بكثرة فى التغذية .

وتضيف الأبحاث الطبية إلى أنّ زيت الزيتون له فوائد عديدة ، فهو يفيد الجهاز الهضمى عامة .. والكبد خاصة . وهو يفضل كافة أنواع الدهون الأخرى نباتية أو حيوانية ، إذ لا يسبب أمراضا للدورة الدموية أو الشرايين كغيره من الدهون ، كما أنه ملطف للجلد ، إذ يجعله ناعما ومرنا . ولزيت الزيتون استعمالات أخرى كثيرة صناعية ، إذ يُحضّر منه بعض الصناعات ، ويدخل فى تركيب أفضل وأحسن أنواع الصابون وفى غير ذلك من مختلف الصناعات الغذائية والصناعية .

23. В притчах и историях ваших предков - назидание для вас, чтобы вы уверовали. Мы послали Нуха к его народу, и он сказал им: "О народ мой! Поклоняйтесь Аллаху Единому. Ведь у вас нет другого бога, кроме Него, который заслуживает поклонения. Неужели вы не боитесь Его наказания и гибели благ, если вы ослушаетесь?"

24. Руководители и знать из его народа, которые не уверовали, опровергая его призыв к вере в Аллаха и отклоняя простой народ от его проповедей, сказали: "Нет никакой разницы между Нухом и вами. Он - только человек, как и вы, но он домогается первенства над вами своими проповедями. Если бы были посланники от Аллаха, как Нух измышляет, то Он ниспослал бы ангелов. Ведь мы никогда не слышали со времён наших праотцов, что был призыв, подобный этому, и чтобы человек был послан посланником.

25. Он - просто человек, одержимый безумием. Подождите, пока не пройдут его безрассудство и безумие, или он не погибнет".

26. И воззвал Нух к своему Господу, после того как отчаялся в том, что его народ уверует: "О Господи, помоги мне против них! Отомсти им за то, что они отвергают мой призыв!"

مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ ٱلْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَٰطِبْنِى فِى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾
فَإِذَا ٱسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى ٱلْفُلْكِ فَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى نَجَّىٰنَا مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِى
مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنۢ بَعْدِهِمْ
قَرْنًا ءَاخَرِينَ ﴿٣١﴾ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ ٱلْمَلَأُ

٢٧ - فقلنا له عن طريق الوحى : اصنع السفينة وعنايتنا ترعاك ، فتدفع عنك شرهم ونرشدك فى عملك ، فإذا حل ميعاد عذابهم ، ورأيت التنور يفور ماء بأمرنا ، فأدخل فى السفينة من كل نوع من الكائنات الحية ذكرا وأنثى ، وأدخل أهلك أيضا إلا من تقرر تعذيبهم لعدم إيمانهم ، ولا تسألنى نجاة الذين ظلموا أنفسهم وغيرهم بالكفر والطغيان ، فإنى حكمت بإغراقهم لظلمهم بالإشراك والعصيان(١) .

٢٨ - فإذا ركبت واستقررت أنت ومَن معك فى السفينة فقل شاكرا ربك : الحمد لله الذى نجانا من شر القوم الكافرين الطاغين .

٢٩ - وقل : يارب مكنى من النزول فى منزل مبارك تطيب الإقامة فيه عند النزول إلى الأرض ، وهبْ لى الأمن فيه ، فأنت ــ وحدك ــ الذى تنزل فى مكان الخير والأمن والسلام .

٣٠ - إن فى هذه القصة عبرا ومواعظ ، وإنا نختبر العباد بالخير وبالشر ، وفى أنفسهم الاستعداد لكل منها .

٣١ - ثم خلقنا من بعد نوح طبقة من الناس غيرهم وهم عاد .

٣٢ - فأرسلنا إليهم هودا وهو منهم . وقلنا لهم على لسانه : اعبدوا الله ــ وحده ــ فليس لكم إلٰه يستحق العبادة غيره ، وهو ــ وحده ــ الجدير بأن تخافوه ، فهلا خفتم عقابه إن عصيتموه ؟ .

---

(١) ﴿ فأوحينا إليه أن اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ، فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين اثنين وأهلك إلا من سبق عليه القول منهم ، ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا إنهم مغرقون ﴾ : إن ما جاء فى وصف حدوث الطوفان فى الآيات الكريمة رغم أنه موجز ، إلا أنه بالنسبة للعقل المفكر يتضمن من المعانى والحقائق العلمية ما يعزب عن كثير من البشر .. والتنور لغة : هو الكانون يخبز فيه . أو هو وجه الأرض وكل مفجر ماء ، وكل محفل ماء .

ونحن عندما نحاول تحديد تاريخ حدوث الطوفان نجد أنه ليس بالأمر السهل ، فقد حدثت طوفانات عديدة فى أزمنة غير سحيقة فى عهد البشرية ، كما حدث فى أرض بابل وفى الهند وفى الصين وفى الأمريكتين .

وجاء ذكر بعض هذه الطوفانات فى القصص الشعبى ، إلا أنه من المستبعد أن يكون لها علاقة بالطوفان العظيم أو طوفان نوح .=

27. Мы внушили ему: “Построй ковчег, и ты будешь под Нашей защитой. Мы отведём от тебя их зло и будем направлять тебя в твоих действиях. Когда настанет время их наказания, ты увидишь, что из печи (вместо огня) извергается вода, погрузи в ковчег по паре (самца и самку) из всех живых существ, кроме тех, которых уже решено наказать за их неверие. Не проси Меня спасти тех, которые были неправедны и несправедливы к себе и к другим, поскольку они не уверовали и были деспотами. Я уже решил, что они будут потоплены за их нечестие, многобожие и неповиновение.

28. Погрузившись и расположившись как следует, вместе с теми, кто последовал за тобой, поблагодари Бога и скажи: “Слава Аллаху, спасшему нас от зла нечестивых людей!”

29. Скажи: “О Господи, помоги мне сойти на берег в благословенном месте, приятном для пребывания. Даруй мне безопасность. Поистине, Ты Единый, кто может поселить в благословенном, безопасном, мирном месте!”

30. В этой истории - притча, назидание. Мы испытываем людей добром и злом. Ведь их души расположены и к тому и к другому.

31. Мы сотворили после Нуха другую общину - “Ад”.

32. Мы послали в эту общину посланником Худа и повелели им через него: “Поклоняйтесь Аллаху Единому! Нет для вас другого бога, достойного поклонения, кроме Него. Его, Единого, вы должны бояться. Неужели вы не страшитесь Его наказания, не повинуясь Ему?”

مِن قَوْمِهِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱلْـَٔاخِرَةِ وَأَتْرَفْنَـٰهُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا مَا هَـٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا
تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُم بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَـٰسِرُونَ ﴿٣٤﴾ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ
إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَـٰمًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ * هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِىَ إِلَّا حَيَاتُنَا
ٱلدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُۥ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾

٣٣ - وقال الكبراء من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الله وما فى الآخرة من حساب وجزاء ، وأعطيناهم أكبر حظ من الترف والنعيم ، قالوا منكرين عليه دعوته ، صادين العامة عن اتباعه : لا فرق بين هود وبينكم ، فما هو إلا بشر مماثل لكم فى البشرية ، يأكل من جنس ما تأكلون منه ، ويشرب من جنس ما تشربون ، ومثل هذا لا يكون رسولا لعدم تميزه عليكم .

٣٤ - وحذروهم فى قوة وتأكيد ، فقالوا : إن أطعتم رجلا يماثلكم فى البشرية ، فأنتم حقا خاسرون لعدم انتفاعكم بطاعته .

٣٥ - وقالوا لهم أيضا منكرين للبعث : أيعدكم ــ هود ــ أنكم تبعثون من قبوركم بعد أن تموتوا وتصيروا ترابا وعظاما مجردة من اللحوم والأعصاب ؟

٣٦ - إن ما وعدكم به بعيد جدا ولن يكون أبدا .

٣٧ - ليس هناك إلا حياة واحدة هى هذه الحياة الدنيا التى نجد فيها الموت والحياة يتواردان علينا ، فمولود يولد وحى يموت ، ولن نبعث بعد الموت أبدا .

٣٨ - ما هو إلا رجل كذب على الله ، وادعى أن الله أرسله ، وكذب فيما يدعو إليه ، ولن نصدقه أبدا .

٣٩ - قال هود بعد ما يئس من إيمانهم : يارب انصرنى عليهم وانتقم منهم ، بسبب تكذيبهم لدعوتى .

= وقد ثبت من البحث والمشاهدة أن العالم انتابته طوفانات عالمية كثيرة ، وأن آخر الطوفانات العالمية كان سببه انقضاء عصر الجليد الأخير وانصهار معظم الثلوج المتجمدة فى القطبين ، ونحن لا نعلم علم اليقين متى انقلب الميزان وفار التنور - وجه الأرض ــ نتيجة للارتفاع المفاجىء فى سرعة انصهار الجليد حتى علا منسوب الماء العام للبحار ، وطفت المياه .

وجدير بالذكر أنه قد صاحب انصهار ثلوج العصر الجليدى الأخير مناخ شديد المطر فى مناطق نائية عن القطبين ، مثل حوض البحر الأبيض المتوسط .

ومهما يكن من شىء فمن المسلم به أنه ليس لدينا من الوثائق ما يمكننا من تحديد عصر نوح وقومه ، فالظاهرة كلها معجزة إلهية . ومن الإعجاز أن ينصح نوح قومه ويحذرهم من غضب الله ، ويوحى الله أنه مغرقهم إذا لم ينتصحوا .. ثم يوحى إليه أن يصنع الفلك ، ثم يأتى أمر الله ، وينقلب الميزان ، ويفور التنور ، وينهمر المطر تحقيقا لما أخبر الله به نوحا من أن الله يعلم أنه لن يؤمن من قومه إلا من قد آمن .

33. Знать и вожди его народа, которые не уверовали в Аллаха, считали ложью встречу с Аллахом в Судный день и воздаяние и наказание в этот День. Мы даровали им большой удел, имущество и блага земного мира, и они сказали, опровергая призыв Худа и отклоняя простой народ от него, чтобы люди не последовали его призыву: "Нет разницы между Худом и вами. Ведь он такой же человек, как и вы. Он ест то, что вы едите, и пьёт то, что вы пьёте. Подобный не может быть посланником. Он ничем не отличается от вас".

34. Нечестивцы решительно и настойчиво предупреждали народ, говоря: "Если вы повинуетесь человеку, подобному вам, тогда вы действительно будете в убытке, так как вам не будет никакой пользы от повиновения ему".

35. Они им также говорили, опровергая воскресение: "Разве Худ вам обещает, что вы будете воскрешены из могил после смерти и после того, как вы станете просто прахом и костями без мяса и нервов?

36. Далеко, далеко, и никогда не будет то, что он вам обещал.

37. Есть только одна жизнь - это жизнь в земном мире, в котором мы видим смерть и рождение поочерёдно: ребёнок рождается, а живой умирает. Мы никогда не будем воскрешены после смерти".

38. Они добавили: "Это - лишь человек, который измышляет на Аллаха ложь, утверждая, что Он его послал. Он лжёт и в том, к чему призывает. Ведь этот человек лжец, и мы ему никогда не поверим".

39. Худ сказал, потеряв надежду, что они уверуют: "Господи мой! Помоги мне и накажи их за то, что они отрицают мой призыв!"

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَٰدِمِينَ ﴿٤٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ ٱلصَّيْحَةُ بِٱلْحَقِّ فَجَعَلْنَٰهُمْ غُثَآءً
فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنۢ بَعْدِهِمْ قُرُونًا ءَاخَرِينَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَـْٔخِرُونَ ﴿٤٣﴾
ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّ مَا جَآءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَٰهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ
لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَٰرُونَ بِـَٔايَٰتِنَا وَسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِۦ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟
قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

٤٠ – قال الله له مؤكدا وعده : سيندمون بعد قليل من الزمن على ما فعلوا عندما يحل بهم العذاب .

٤١ – فأخذتهم صيحة شديدة أهلكتهم لاستحقاقهم ذلك الهلاك ، وجعلناهم فى الحقارة والضعف كالشىء الذى يجرفه السيل أمامه من أعواد الشجر وأوراقه . هلاكا وبُعدا عن الرحمة للظالمين بكفرهم وطغيانهم .

٤٢ – ثم خلقنا من بعدهم أقواما غيرهم ، كقوم صالح ولوط وشعيب .

٤٣ – لكل أمة زمنها المعيَّن لها لا تتقدم عنه ولا تتأخر .

٤٤ – ثم أرسلنا رسلنا متتابعين كلا إلى قومه ، وكلما جاء رسول إلى قومه كذَّبوه فى دعوته ، فأهلكناهم متتابعين ، وجعلنا أخبارهم أحاديث يرددها الناس ويعجبون منها ، فَبُعْداً عن الرحمة وهلاكا لقوم لا يصدقون الحق ولا يذعنون له .

٤٥ – ثم أرسلنا موسى وأخاه هارون بالدلائل القاطعة الدالة على صدقهما ، وبحجة واضحة تبيِّن أنهما قد أرسلا من عندنا .

٤٦ – أرسلناهما إلى فرعون وقومه فامتنعوا فى تكبر عن الإيمان ، وهم قوم موصوفون بالكبر والتعالى والقهر .

40. Аллах ответил ему, подтверждая Своё обещание: "Через малый срок, когда постигнет их наказание, они раскаются в том, что вершили".

41. И постиг их внезапный вопль, такой сильный, что уничтожил их всех, потому что они заслужили это. Мы унизили их так, что они стали подобны унесённому потоком сору из ветвей и листьев деревьев. Да погибнет и сгинет неправедный народ в наказание за неверие, несправедливость и притеснение!

42. Мы возрастили после этой общины другие поколения: народ Салиха, народ Лута и народ Шуайба.

43. Для каждого народа свой определённый срок. Он не может ни опередить, ни замедлить его.

44. Потом Мы посылали Своих посланников одного за другим. Каждый посланник был послан к своему народу. Всякий раз, как посланник приходил к своему народу, народ опровергал его призыв и считал его лжецом. Мы эти общины губили одну за другой и сделали их истории притчами, которые люди повторяют и которым они удивляются. Да не будет милосердия Аллаха и сгинут те, которые не уверовали в Его Истину, не поклонялись и не повиновались Ему!

45. Потом Мы послали Мусу и его брата Харуна с явными знамениями об истине их послания и с явными доказательствами.

46. Мы их послали к Фараону и его народу, но они отвернулись от Наших посланников, преисполненные гордыней, и не уверовали в Истину Аллаха. Ведь, поистине, они - высокомерные, превозносящиеся угнетатели!

فَقَالُوٓاْ أَنُؤۡمِنُ لِبَشَرَيۡنِ مِثۡلِنَا وَقَوۡمُهُمَا لَنَا عَٰبِدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُواْ مِنَ ٱلۡمُهۡلَكِينَ ﴿٤٨﴾
وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَا مُوسَى ٱلۡكِتَٰبَ لَعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلۡنَا ٱبۡنَ مَرۡيَمَ وَأُمَّهُۥٓ ءَايَةٗ وَءَاوَيۡنَٰهُمَآ إِلَىٰ رَبۡوَةٖ ذَاتِ قَرَارٖ
وَمَعِينٖ ﴿٥٠﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُواْ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَٱعۡمَلُواْ صَٰلِحًاۖ إِنِّي بِمَا تَعۡمَلُونَ عَلِيمٞ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمۡ أُمَّةٗ
وَٰحِدَةٗ وَأَنَا۠ رَبُّكُمۡ فَٱتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

٤٧ - وقالوا فى تعجب وإنكار : أنؤمن بدعوة رجلين مماثلين لنا فى البشرية ، وقومهما ــ بنو إسرائيل ــ خاضعون لنا ومطيعون كالعبيد ؟ .

٤٨ - فكذبوهما فى دعوتهما فكانوا من المهلكين بالغرق .

٤٩ - ولقد أوحينا إلى موسى بالتوارة ، ليهتدى قومه بما فيها من إرشادات إلى الأحكام وأسباب السعادة .

٥٠ - وجعلنا عيسى ابن مريم وأمه فى حملها به من غير أن يمسها بشر وولادته من غير أب دلالة قاطعة على قدرتنا البالغة ، وأنزلناها فى أرض مرتفعة منبسطة تستقر فيها الإقامة ويتوافر الماء الذى هو دعامة العيش الرغيد .

٥١ - وقلنا للرسل ليبلغوا أقوامهم : كلوا من أنواع الحلال الطيب ، وتمتعوا واشكروا نعمتى بعمل الصالحات ، إنى عليم بما تعملون ومجاز لكم عليه .

٥٢ - وقلنا لهم ليبلغوا أقوامهم : إن هذا الدين الذى أرسلتكم به دين واحد فى العقائد وأصول الشرائع ، وإنكم أمة واحدة فى كل الأجيال ، منهم المهتدى ومنهم الضال ، وأنا ربكم الذى أمرتكم باتباعه فخافوا عقابى إن عصيتم .

47. Они спросили с удивлением и неверием: “Неужели мы уверуем в призыв двух мужчин таких же людей, как и мы, когда их народ, сыны Исраила, повинуются и подчиняются нам словно рабы?”

48. Этот народ опроверг призыв Мусы и Харуна и был потоплен.

49. Мы дали Мусе Тору, чтобы его народ пошёл прямым путём, руководствуясь назиданиями и наставлениями этой Книги, ведущей к благу и счастью.

50. Мы сделали явным знамением Нашего великого могущества Ису, сына Марйам, которая понесла и родила его, хотя ни один человек не прикасался к ней. Мы поселили её в убежище на холмистом месте, где протекала вода - главная основа прекрасной жизни.

51. Мы повелели посланникам, чтобы они передали своим народам: “Ешьте из доброй пищи, разрешённой вам Аллахом, наслаждайтесь едой и благодарите Меня своими добродеяниями. Ведь Я знаю, что вы делаете и воздам вам за это!”

52. Мы также сказали посланникам, чтобы они передали своим общинам: “Эта религия, с которой Я вас послал - единая религия своим вероучением (истинной акидой) и основами шариата (религиозными законами), и вы - такой же народ, как и предыдущие поколения. Среди вас есть те, кто, уверовав в Господа, пошёл по прямому пути, и те, кто, не уверовав, впал в заблуждение. Поистине, Я - ваш Господь, и Я повелел поклоняться Мне. Бойтесь Моего наказания, если вы не повинуетесь!”

فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ
حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾
إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾ وَٱلَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ
لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَٱلَّذِينَ يُؤْتُونَ مَآ ءَاتَوا۟ وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَٰجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ
فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَهُمْ لَهَا سَٰبِقُونَ ﴿٦١﴾

٥٣ - فقطع الناس أمر دينهم ، فمنهم المهتدون ومنهم الضالون الذين اتبعوا أهواءهم ، فتفرقوا بسبب ذلك جماعات مختلفة متعادية ، كل جماعة فرحة بما هى عليه ، ظانة أنه ــ وحده ــ الصواب .

٥٤ - فاترك الكافرين ــ يا محمد ــ فى جهالتهم وغفلتهم مادمت قد نصحتهم حتى يقضى الله فيهم بالعذاب بعد حين .

٥٥ - أيظن هؤلاء العاصون أنا إذ نتركهم يتمتعون بما أعطيناهم من المال والبنين .

٥٦ - نكون قد رضينا عنهم ، فنفيض عليهم الخيرات بسرعة وكثرة ، إنهم كالبهائم لا يشعرون لعدم استخدامهم عقولهم ، إننى غير راض عنهم ، وإن هذه النعم استدراج منا لهم .

٥٧ - إن الذين هم يخشون الله ويهابونه وقد تربت فيهم المخافة منه سبحانه .

٥٨ - والذين هم يؤمنون بآيات ربهم الموجودة فى الكون والمتلوة فى الكتب المنزلة .

٥٩ - والذين هم لا يشركون بالله أحدا .

٦٠ - والذين يعطون مما رزقهم الله ، ويؤدون عملهم وهم خائفون من التقصير ، لأنهم راجعون إلى الله بالبعث ومحاسبون .

٦١ - أولئك يسارعون بأعمالهم إلى نيل الخيرات ، وهم سابقون غيرهم فى نيلها .

53. Но люди разошлись во мнении относительно истинной веры. Среди них были те, кто уверовав, пошёл по прямому пути, и те, кто не уверовав, впал в заблуждение и стал рабом своих страстей и прихотей. И так они раскололи религию на толки и разделились на различные враждебные группировки. Каждая группа ликует от того, чему она следует, думая, что это единственно истинная вера.

54. Оставь, о Мухаммад, нечестивцев пребывать в невежестве и заблуждении, - ведь ты их увещевал, - до времени, определённого Аллахом для их наказания.

55. Неужели эти неповинующиеся воображают, поскольку Мы оставляем их наслаждаться теми благами, которые Мы им даровали, из имущества и сыновей,

56. что Мы довольны ими и спешим одарить их обильными благами? Они, как скот, не чувствуют, не понимают и не хотят уразуметь, что Я не доволен ими. Ведь эти блага - только лишь потому, что Мы искушаем их.

57. Те богобоязненные, которые в смирении и страхе трепещут перед Аллахом,

58. которые уверовали в знамения Аллаха, находящиеся во Вселенной и упомянутые в ниспосланных Книгах,

59. которые уверовали в Аллаха Единого и не придают Ему сотоварищей,

60. которые раздают милостыню из того, что Аллах им даровал, и выполняют свои обязанности, боясь упущения, потому что в День воскресения они предстанут перед Аллахом для расчёта, -

61. эти спешат творить добродеяния и опережают друг друга на пути вершения благого.

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ ۖ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾
بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم
بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْأَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ ۖ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُمْ
عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سَامِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾ أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُم مَّا لَمْ يَأْتِ
آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

---

٦٢ - ونحن لا نكلف أحدا إلا بما يستطيع أن يؤديه ، لأنه داخل فى طاقته ، وكل عمل من أعمال العباد مسجل عندنا فى كتاب ، وسنخبرهم به كما هو ، وهم لا يظلمون بزيادة عقاب أو نقص ثواب .

٦٣ - لكن الكافرين بسبب عنادهم وتعصبهم غافلون عن عمل الخير والتكليف بالمستطاع ودقة الحساب ، وإلى جانب ذلك لهم أعمال أخرى خبيثة مداومون عليها .

٦٤ - فإذا أوقعنا العذاب بالأغنياء المترفين ضجوا وصرخوا مستغيثين .

٦٥ - فنقول لهم : لا تصرخوا ولا تستغيثوا الآن ، فلن تفلتوا من عذابنا ، ولن ينفعكم صراخكم شيئا .

٦٦ - لا عذر لكم ، فقد كانت آياتى الموحى بها تقرأ عليكم ، فكنتم تعرضون عنها إعراضا يقلب أحوالكم ، ولا تصدقونها ولا تعملون بها .

٦٧ - وكنتم فى إعراضكم متكبرين مستهزئين ، تصفون الوحى بالأوصاف القبيحة عندما تجتمعون للسمر .

٦٨ - أجهل هؤلاء المعرضون فلم يتدبروا القرآن ليعلموا أنه حق ؟ أم كانت دعوة محمد لهم غريبة عن الدعوات التى جاء بها الرسل إلى الأقوام السابقين الذين أدركهم آباؤهم ؟ .

62. Мы не возлагаем на душу груза больше, чем она может вынести, и что ей по силам. Каждое деяние Наших рабов записано в Книге, и Мы скажем им об их деяниях (как они есть), и они будут рассуждены справедливо без увеличения или уменьшения в награде и наказании.

63. Но сердца неверных в результате упрямства и фанатичных пристрастей не ведают, что нужно вершить добродеяния, что обязанности, предписанные для них Аллахом, легко выполнимы и что Аллах справедливо рассудит их в Судный день. И к тому же они постоянно вершат и другие коварные деяния.

64. Когда Мы подвергаем богатых изнеженных из них каре, они кричат и вопят, требуя помощи и спасения.

65. Мы им тогда говорим: "Не кричите и не просите о помощи; вы не избежите Нашего наказания. Ваши вопли и крики не помогут вам.

66. И никаких оправданий вы теперь не можете представить. Поистине, Мои айаты, которые Мы ниспослали, читались вам, но вы отворачивались от них и опровергали их, не уверовав в них и не следуя им.

67. Опровергая их, вы превозносились и издевались над ними, дурно отзываясь об Откровении в своих беседах".

68. Неужели эти отвратившиеся (от Наших айатов), не поразмыслили над Кораном, чтобы уразуметь, что он - Истина Аллаха? Или же призыв Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует! - не был подобен тем, с которыми приходили к их отцам и предыдущим поколениям?

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ
وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ بَلْ أَتَيْنَاهُم
بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٧١﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّكَ
لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٤﴾ * وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ
وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾

٦٩ - أم لم يعرفوا رسولهم ــ محمدا ــ الذى نشأ بينهم فى أخلاقه العالية التى لا يعهد معها الكذب ، فهم ينكرون دعوته الآن بغيا وحسدا ؟ .

٧٠ - أم يقولون : إنه مجنون ؟ كلا : إنه جاءهم بالدين الحق وأكثرهم كارهون للحق ، لأنه يخالف شهواتهم وأهواءهم فلا يؤمنون به .

٧١ - ولو كان الحق تابعا لأهوائهم لشاع الفساد فى الأرض ولتنازعت الأهواء ، ولكنا أرسلنا إليهم القرآن الذى يُذَكِّرهم بالحق الذى يجب أن يجتمع عليه الجميع ، ومع ذلك هم معرضون عنه(١)

٧٢ - بل أتطلب منهم ــ أيها النبى ــ أجراً على أداء الرسالة ؟ لم يكن ذلك ، فإن أجر ربك خير مما عندهم ، وهو خير المعطين .

٧٣ - وإنك ــ يا محمد ــ لتدعوهم إلى الدين الذى هو الطريق المستقيم الموصل إلى السعادة .

٧٤ - وإن الذين لا يؤمنون بالآخرة وما فيها من نعيم أو جحيم يعدلون عن الطريق المستقيم الذى يأمن السائر فيه من السَّير إلى طريق الحيرة والاضطراب والفساد .

٧٥ - ولو رحمناهم وأزلنا عنهم ما نزل بهم من ضرر فى أبدانهم وقحط فى أموالهم ونحو ذلك ، لزادوا كفرا ، وتمادوا فى الطغيان .

---

(١) ﴿ ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض ومن فيهن ، بل أتيناهم بذكرهم فهم عن ذكرهم معرضون ﴾ : كلمة « الحق » من الألفاظ المشتركة ، قد يراد منها « الله » سبحانه وتعالى نحو قوله تعالى ﴿ فتعالى الله الملك الحق ﴾ ويراد منها « القرآن » نحو قوله تعالى ﴿ إنا أرسلناك بالحق ﴾ ويراد منها « الدين كله » بما فيه من قرآن وسنة صحيحة نحو قوله : ﴿ وقل جاء الحق وزهق الباطل ﴾ والأظهر فى كلمة الحق هنا هو أن المراد المعنى الأول « الله » سبحانه وتعالى . ويكون المراد من الآية : لو جرت سنة الله على مسايرة الكافرين فيما يشتهونه ويقترحونه لما استقام النظام الذى قام عليه شأن السموات والأرض وما فيهما من خلائق ، ولكن الله ذو حكمة عالية وقدرة نافذة وقد أحاط علمه بما خلق ، وتكفلت حكمته بالتدبير المحكم . وتصريح القرآن بأن السموات فيها خلائق إنما يوجهنا هذا :

أولا : إلى أن الإيمان بذلك على وجه الإجمال يكفينى . تاركين التعرض إلى التفصيل إلى أن يشاء الله - سبحانه - بيانه بمقتضى قوله ﴿ سنريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم ﴾ .

ثانيا : يوجهنا أيضا إلى محاولة البحث العلمى إن استطعنا ، « لأن الوصول إلى هذه الحقيقة يؤكد إيماننا .. والإيمان هو الهدف الهام من توجيهنا إلى تلك الآيات » .

69. Неужели они не знали, что Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует, - который вырос среди них, обладает высокими моральными качествами и не приемлет любую ложь? Они теперь отрицают его призыв из-за ненависти и зависти.

70. Или они говорят: "Он безумец!"? - Но нет, он принёс им Истину Аллаха, но большинство их ненавидит эту Истину, ибо она противоречит их страстям и прихотям, и поэтому они не уверовали в эту религию.

71. Если бы Истина Аллаха совпадала с их страстями и прихотями, распространилась бы порочность на земле и боролись бы разные пристрастия. Ведь Мы ниспослали им Коран, напоминающий им об истине, которая должна была бы объединить их всех, но они отвергли эту истину.

72. Или ты (о пророк!) просишь у них награду за то, что передаёшь им Послание? Нет, это далеко не так! Поистине, награда от твоего Господа лучше, чем то, что есть у них. Поистине, Аллах - лучший из дарующих удел!

73. Ты (о Мухаммад!) призываешь их к религии истины - к прямому пути, ведущему к счастью.

74. Те, которые не веруют в дальнюю жизнь, где будет и рай благоденствия, и ад, уклоняются от прямого пути, идущий по которому не подвергается опасности, растерянности, беспокойству, пороку.

75. Если бы Мы помиловали их и избавили от вреда, которому подвергается их здоровье, и от недостатка в имуществе, они бы ещё больше упорствовали в своём опровержении истинной веры и в произволе.

وَلَقَدْ أَخَذْنَٰهُم بِٱلْعَذَابِ فَمَا ٱسْتَكَانُوا۟ لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾
حَتَّىٰٓ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ ٱلَّذِىٓ أَنشَأَ لَكُمُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ
وَٱلْأَفْـِٔدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى ذَرَأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ
وَيُمِيتُ وَلَهُ ٱخْتِلَٰفُ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوا۟ مِثْلَ مَا قَالَ ٱلْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوٓا۟ أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
وَعِظَٰمًا أَءِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَءَابَآؤُنَا هَٰذَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾ قُل لِّمَنِ

٧٦ - ولقد عذَّبناهم بعذاب أصابهم كالقتل أو الجوع فما خضعوا بعده لربهم ، بل أقاموا على عتوهم واستكبارهم بمجرد زواله .

٧٧ - سيستمرون على إعراضهم حتى إذا عذَّبناهم عذابا شديدا بالجوع أو القتل فى الدنيا صاروا حيارى يائسين من كل خير ، لا يجدون مخلصا .

٧٨ - وكيف تكفرون بالله وهو الذى أنشأ لكم السمع لتسمعوا الحق ، والأبصار لتروا الكون وما فيه ، والعقول لتدركوا عظمته فتؤمنوا ؟ . إنكم لم تشكروا خالقها بالإيمان والطاعة إلا قليلا أى قلة .

٧٩ - وهو الذى خلقكم فى الأرض ، وإليه ــ وحده ــ تُجمعون للجزاء يوم القيامة .

٨٠ - وهو الذى يحيى ويميت وبأمره وقوانينه تعاقب الليل والنهار واختلافهما طولا وقصرا ألا تعقلون دلالة ذلك على قدرته ووجوب الإيمان به ، وبالبعث ؟ (١) .

٨١ - لم يفعلوا ذلك ، بل قلدوا السابقين المكذبين ، فقالوا : مثل قولهم .

٨٢ - قالوا منكرين للبعث : أنبعث بعد الموت وبعد أن نصير ترابا وعظاما ؟ .

٨٣ - لقد وُعدنا ووعد آباؤنا من قبلنا بذلك ، وما هذا الوعد إلا أكاذيب السابقين التى سَطَّروها .

---

(١) ﴿ وهو الذى يحيى ويميت وله اختلاف الليل والنهار أفلا تعقلون ﴾ : وردت آيات الليل والنهار فى مواضع كثيرة من القرآن الكريم مما يدل على أن الحق - سبحانه وتعالى - يذكر عباده بهذه الآية الكونية ، وبما تضمنه من معان عميقة تحفز المفكرين إلى التأمل والبحث . واختلاف الليل والنهار ينصب على ناحيتين رئيسيتين : الأولى : الاختلاف الزمنى طولا وقصرا .

والثانية : الاختلاف فى الظواهر الطبيعية وغير المرئية

أولا - الاختلاف الزمنى :

النهار هو الفترة الزمنية بين ظهور حاجب الشمس واختفائها من أفق المكان حيث يلامس سطح الأرض . وكما نشاهدها بالعين . وحيث إن موقع الحافة العليا للشمس فى الحقيقة ليس عند الأفق . وإنما نشاهده كذلك لأن الإشعاع المنبعث منها ينقوس لدى انكساره أثناء مروره فى طبقات الجو ، حتى يصل إلى عين الراصد ، فيشاهدها كما لو كانت عند الأفق . والواقع أن هذه الحافة منخفضة عن الأفق بمقدار ٣٥ دقيقة قوسية .

والليل هو الفترة الزمنية المتممة لفترة النهار . حتى يبلغ مجموعها فترة دوران الأرض حول محورها من الغرب إلى الشرق .

وفيما بين الليل والنهار فترتان زمنيتان : هما فترة الشفق الغربى ، وفترة الشفق الشرقى . وفترة النهار تختلف باختلاف عرض المكان وفصول السنة . وتختلف أيضا فترة الليل تبعا لذلك . وتحدد مواقيت الصلاة والصوم تبعا لوضع قرص الشمس بالنسبة للأفق .

ثانيا - الاختلاف فى الظواهر الطبيعية :

وهذه هى الظواهر العديدة المختلفة الألوان ، والتى تنشأ من تفاعل الإشعاع الشمسى - بما يحتويه من اشعاعات موجية مرئية وغير مرئية . وجسيمات تحمل شحنات كهربائية - مع الغلاف الجوى وأسطح البحار والصحارى .. الخ . كما أن هناك مشاهدات فلكية كالخسوف والكسوف والمذنبات والنجوم والكواكب السيارة والشهب والنيازك التى قد تحجبها شدة إضاءة الشمس أثناء النهار ، بينما تظهر واضحة أثناء الليل .

وأهم الظواهر الفيزيائية التى يختلف فيها الليل عن النهار هى الضوء بالنهار ، وسببه أن الاشعاع المباشر للشمس عندما يسقط على الغلاف الجوى الذى يتألف من جزئيات صغيرة ، وبحمل الذرات الغبارية ، فإنه ينعكس فى مختلف الاتجاهات ويتشتت . =

76. Мы их наказали - одни из них погибли, другие страдали от голода, но они не повиновались своему Господу, а продолжали пребывать в своей заносчивости и гордыне, как только наказание проходило.

77. Они продолжат опровергать Истину Аллаха до тех пор, пока Мы не поразим их сильной карой, подвергнув голоду и гибели в земном мире. И тогда они, растерянные, придут в отчаяние, не находя ни блага, ни выхода из бедственного положения.

78. Как же вы не уверуете в Аллаха? Ведь Он - Тот, кто даровал вам слух, чтобы вы слышали истину, и зрение, чтобы вы видели Вселенную и всё, что в ней, и разум, чтобы вы постигли Его величие и уверовали в Него. А вы так мало благодарны Творцу всего этого своей верой и повиновением!

79. Поистине, Аллах - Тот, кто сотворил вас и рассеял по земле, и к Нему Единому вы будете собраны для воздаяния в Судный день.

80. Поистине, Аллах оживляет и умерщвляет. По Его повелению и законам чередуются ночь и день, которые различаются по своей продолжительности. Неужели вы не разумеете этих знамений, доказывающих могущество Аллаха и то, что надо обязательно уверовать в Него и в воскресение?

81. Но они не уверовали в Аллаха, а подражая своим неверным предкам, говорили то же самое, что и они.

82. Они говорили, отрицая воскресение: "Неужели мы будем воскрешены после смерти и после того, как мы станем прахом и костями?

83. Это было уже обещано нам и нашим отцам раньше, но ведь это только вымыслы прежних людей".

ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ
ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ
عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾ بَلْ أَتَيْنَٰهُم بِٱلْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿٩٠﴾

٨٤ – قل لهم يا محمد : مَن الذى ملك الأرض ومَن فيها من الناس وسائر المخلوقات ؟ إن كان لكم علم فأجيبونى ؟ .

٨٥ – سيقرون بأن الأرض لله ، قل لهم إذن : فلم تشركون به ؟ ألا تذكرون أن من يملك ذلك جدير بأن يُعبد وحده ؟

٨٦ – قل لهم أيضا : من رب السموات السبع ورب العرش العظيم ؟

٨٧ – سيقرون بأنه هو الله . قل لهم إذن : ألا تخافون عاقبة الشرك والكفر والعصيان لصاحب هذا الخلق العظيم ؟ .

٨٨ – قل لهم أيضا : من بيده مُلْك كل شىء ، ومن له الحكم المطلق فى كل شىء ، وهو يحمى بقدرته من يشاء ، ولا يمكن لأحد أن يحمى أحدا من عذابه ؟ إن كنتم تعلمون جوابا فأجيبوا .

٨٩ – سيقرون بأنه هو الله ، قل لهم : إذن كيف تُخدعون بالهوى ووحى الشياطين ، وتنصرفون عن طاعة الله ؟.

٩٠ – لقد بيَّنا لهم الحق على لسان الرسل ، وإنهم لكاذبون فى كل ما يخالف هذا الحق .

= فإذا ما كان الجو نقيا ، وأحجام الذرات الغبارية صغيرة جدا ، والشمس مرتفعة عن الأفق ، فإن اللون الأكثر تشتتا وحساسية للعين هو اللون الأزرق ، فتظهر السماء زرقاء . أما عند شروق الشمس أو غروبها فإن الأفق يظهر بلون برتقالى متدرجا إلى الأحمر ، بينما يكون الضوء الأزرق المشتت قليلا نسبيا ، ولذلك يميل لون السماء عند السمت إلى الزرقة الخافتة .

وفى لحظة غروب الشمس عند الأفق نشاهد لونا أخضر عند حافتها العليا لمدة ثانية أو أقل ، وهذه الظاهرة تسمى بالوميض الأخضر . وتشاهد عادة على سطح البحر أو وراء قمم الجبال أو حتى جدران المنازل . وترجع هذه الظاهرة إلى حيود الأشعة الشمسية الذى ينتج عنه تحلل طيفها إلى ألوان منها الضوء الأخضر .

والخلاصة أن الاشعاع الشمسى يتألف من مجموعة من الألوان المرئية وغير المرئية ، ويتميز بعضها عن بعض بطول الموجة وتخضع هذه الموجات لخصائص عديدة الإنكسار والانعكاس والتشتت والتداخل والاستقطاب والحيود . فإذا ما تفاعلت مع الغلاف الجوى فى حالات خاصة فإننا نشاهد نتيجة لهذا التفاعل ضوء النهار والسراب وأقواس قزح والهالة الشمسية إلى غير ذلك من آيات السماء (من الظواهر الكونية) وعندما تغيب الشمس وراء الأفق تظهر السماء بألوان مختلفة نظرا لتشتت الضوء فى طبقات الجو العليا ، وكلما انخفض قرص الشمس خفت ضوء الشفق ، وقلت ألوانه طيفية ، حتى إذا ما بلغ ١٨,٥ درجة قوسية أصبحت السماء قاتمة ، وقد اصطلح الميقاتيون على أن تلون هذه اللحظة « غسق الليل » إيذانا بصلاة العشاء ، وتلك اللحظة يبدأ عندها الضوء البروجى على شكل مخروط قاعدته عند الأفق الغربى ، ويمتد فى ليالى الشتاء الصافية حتى تبلغ قمة المخروط السمت ، وفى منتصف الليل تظهر الأضواء البروجية عند الشروق أولا كرأس قمة مخروط ضوئى خافت ، تزداد قمته فى الارتفاع ، وتمتد قاعدته عن الأفق الشرقى ، حتى إذا بزغ الفجر ، أى عندما تكون الشمس منخفضة عن الأفق الشرقى بمقدار ١٨,٥ درجة ، وهى إيذان بصلاة الفجر ، وتبدأ ألوان الشفق الشرقى فى الظهور تدريجيا وعكسيا للشفق الغربى ، وما الفجر الكاذب سوى الضوء البروجى الذى يبلغ أقصى شدته عندما تكون الشمس منخفضة عن الأفق الشرقى بأكثر من ١٨,٥ درجة قوسية . ولقد تبين حديثا أن للشمس غلافا رقيقا يمتد امتدادا هائلا فى الفضاء حتى يكاد يلامس جو الأرض . هذا هو الغلاف الرقيق الذى يسبب الأضواء البروجية بأشكالها المختلفة .

هذه الظواهر العديدة التى ذكرناها على سبيل المثال لا الحصر تكشف لنا إذا كانت السماء خالية من السحب والأعاصير المحملة بالتراب ، لأنها تظهر عندئذ وهى قاتمة اللون ، وإذا كانت السحب محملة بقطرات ماء المطر فهى تتفاعل مع الأشعة الشمسية ، وتحدث أقواس قزح فى أحوال مناسبة . =

84. Скажи им, о Мухаммад: "Кому же принадлежат земля и все живые существа на ней? Если вы знаете, то ответьте мне?"

85. Они ответят: "Аллаху принадлежит земля". Тогда скажи им: "Почему же вы не уверовали в Него Единого? Разве вы не разумеете, что Тот, кому принадлежит земля, заслуживает поклонения Ему Единому?"

86. Скажи им: "Кто Господь семи небес и Господь Великого Трона?"

87. Они ответят: "Аллах". Скажи им тогда: "Неужели вы не боитесь дурных последствий многобожия, неверия и неповиновения Владыке этого великого творения?"

88. Скажи им также (о Мухаммад!): "В чьей руке власть над всем сущим? Кто имеет абсолютное господство над всякой вещью? Он защищает Своей властью и мощью, кого Он желает, и никто не может никого защитить от Его наказания. Если же вы знаете ответ, то ответьте мне".

89. Они (неверующие), несомненно, ответят: "Аллах". Тогда скажи (о Мухаммад!) им: "Как же вы обмануты своими страстями и искушениями шайтана, когда уклоняетесь от поклонения и повиновения Аллаху!"

90. Мы уже разъяснили им истину через Наших посланников. Они ведь лгут во всём, говоря то, что не соответствует этой истине.

مَا ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُۥ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَٰنَ
ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾ قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّى مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾
رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِى فِى ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَإِنَّا عَلَىٰٓ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَٰدِرُونَ ﴿٩٥﴾ ٱدْفَعْ بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ
ٱلسَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾ وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ ﴿٩٧﴾ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾

٩١ - ما اتخذ الله له ولدا ، وقد تنزَّه عن ذلك ، وما كان له شريك . إذ لو كان له شريك لاستبد كل بما خلق ، وصار له ملكه ، ولتناحر بعضهم مع بعض كما يُرى بين الملوك ، ولفسد الكون بهذا التنازع ، فتنزه الله عما يقوله المشركون مما يخالف الحق .

٩٢ - هو محيط بكل شيء علما ، يعلم ما يغيب عنا وما يظهر لنا ، فتنزه الله عما يُنسبه الكافرون إليه من وجود الشريك له .

٩٣ - قل ــ يأيها النبى ــ : يارب : إن أنزلت بهم ما أوعدتهم من العذاب فى الدنيا ، وأنا موجود بينهم .

٩٤ - فأتوسل إليك ألا تجعلنى معذبا مع القوم الكافرين الطاغين .

٩٥ -ونحن قادرون تماما على أن نريك ما أوعدناهم به من العذاب نازلا بهم ، فاطمئن لنصرنا .

٩٦ - استمر فى دعوتك وقابل إساءتهم بالعمل الذى هو أحسن من العفو أو غيره ، ونحن عالمون تماما بما يصفونك به ، ويصفون به دعوتك من سوء وافتراء ، وسنجازيهم عليه .

٩٧ - وقل : يارب أستعيذ بك من أثر وساوس الشياطين على نفسى بعملى مالا يرضيك .

٩٨ - وأستعيذ بك يارب . أن يكونوا معى فى أى عمل من الأعمال ، ليكون سليما خالصا لوجهك الكريم .

= وإذا كان السحاب من نوع السمحاق الذى يحمل حبيبات بلورية مسدسة من الماء المتجمد ، فإن هذه البلورات تتفاعل مع الإشعاع الشمسى فتنكسر من سطحها إلى داخلها ، وينعكس على الأسطح الداخلية ، ثم تنكسر إلى الخارج . وقد نشاهد فى ظروف وأحوال مناسبة الهالة الشمسية بمظاهرها الجميلة وهى دائرة ملونة كبرى حول الشمس . وعند سواد الليل تظهر النجوم متلألئة على سطح القبة السماوية كما لو كانت على مسافة قريبة منا ، وفى الواقع هى على مسافات شاسعة . تقاس بالسنين الضوئية كما تظهر على هذه القبة أيضا الكواكب السيارة والمذنبات والشهب والنيازك وهى تبدو قريبة جدا نسبيا ، كما لو كانت فروق المسافات قد انعدمت . وهذا ما يجعلنا ندرك المعنى الخفى فى قوله تعالى : ﴿ وجعلنا السماء سقفاً محفوظا وهم عن آياتها معرضون ﴾ . وكما بينا سابقا بالإضافة إلى الإشعاعات الموجبة من الشمس هناك إشعاع من الجسيمات ، ينبعث من مناطق شمسية شديدة النشاط ، وتحمل شحنات كهربائية ، كما تنبعث منها إشعاعات شديدة فوق البنفسجية ، وهذه الجسيمات والإشعاعات تتفاعل مع الطبقات الجوية العليا ، وتتأثر بالمجال المغناطيسى حول الأرض ، فتثير الأضواء الشمالية أو الجنوبية ، وتظهر قائمة فى السماء الشمالية كأنها ستائر من الإضاءة الجميلة الألوان خضراء اللون ، وتميل إلى الإحمرار والزرقة عند الحواف . هذه الأشكال قد تستمر ساعات طويلة فى السماء الشمالية وتكاد تشاهدها فى ليال عديدة عندما تكون الشمس فى أوج نشاطها ، نرى هذه الستائر ليس فقط فى العروض الشمالية بل أيضا فى العروض المتوسطة الاستوائية . =

91. Аллах не брал Себе сына и у Него не было сына. Аллах превыше этого. Никогда не было у Аллаха соучастников. Если бы были наряду с Ним другие божества, то каждый бог взял бы себе то, что сотворил, и имел бы своё царство независимо от других, и они стремились бы возвыситься друг над другом и боролись бы друг с другом, и расстроилась бы Вселенная. Хвала Аллаху! Безупречен Он и превыше того, что они ложно измышляют.

92. Аллах ведает о всякой вещи. Он знает сокровенное и явное в нас. Аллах превыше того, что неверующие ложно придают Ему в соучастники.

93. Скажи, о пророк: "Господи! Если Ты накажешь их, как обещал, в ближайшей жизни, в то время как и я нахожусь среди них,

94. то я прошу Тебя, о Господи, не помещай меня в число неправедных, несправедливых, которых Ты накажешь!"

95. А ведь Мы, истинно, можем показать тебе наказание, обещанное Нами им, и подвергнуть их этой каре. Будь уверен в Нашей поддержке и помощи.

96. Продолжай свой призыв к Нашему Посланию, отклоняй их зло тем, что лучше, - прощением, или чем-либо другим. Мы точно знаем то, что они тебе приписывают, называя твой призыв к истине ложью и скверным измышлением. За это Мы их накажем.

97. Скажи (о Мухаммад!): "Господи! Я ищу убежища у тебя от искушений дьяволов и боюсь, как бы я не сделал то, чем Ты не будешь доволен!"

98. Я прибегаю к Тебе, Господи, чтобы найти у Тебя убежище от них в любом деянии, чтобы оно было правильным и обращённым только к Твоему Благородному Лику!"

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ ٱلْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ٱرْجِعُونِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّىٓ أَعْمَلُ صَٰلِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّآ ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۖ
وَمِن وَرَآئِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿١٠١﴾
فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ
فِى جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ ٱلنَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَٰلِحُونَ ﴿١٠٤﴾ أَلَمْ تَكُنْ ءَايَٰتِى تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا
تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾

٩٩ – سيستمرون على تكذيبهم ، حتى إذا حل موعد موت أحدهم ندم ، وقال : يارب رُدَّنى إلى الدنيا .

١٠٠ – لأعمل عملا صالحا فيما تركته من مالى أو زمنى ، ولن يجاب إلى طلبه ، فهذا كلام يقوله دون فائدة لا يقبل منه ، ولو استُجيب له لم يعمل به ، ومع ذلك فلن يعود أبدا ، فالموت حاجز بينهم وبين ما يتمنون إلى أن يبعثهم الله .

١٠١ – فإذا جاء موعد البعث بعثناهم بدعوتهم إلى الخروج من مقابرهم ، وذلك بما يشبه النفخ فى البوق فيجيئون متفرقين ، لا تنفع أحدا قرابة أحد ، ولا يسأل بعضهم بعضا شيئا ينفعه ، فلكل منهم يومئذ ما يشغله .

١٠٢ – فالعمل هو ميزان التقدير ، فمن كانت لهم عقائد سليمة وأعمال صالحة لها وزن فى ميزان الله ، فأولئك هم الفائزون .

١٠٣ – ومن لم يكن لهم حسنات أو أعمال لها وزن عند الله ، فأولئك هم الذين خسروا أنفسهم ببيعها للشيطان ، وهم معذبون فى النار ، خالدون فيها .

١٠٤ تحرق النار وجوههم ، وهم فيها عابسون من سوء مصيرهم .

١٠٥ – يؤنبهم الله ويقول لهم : قد كانت آياتى المنزلة تُقرأ عليكم فى الدنيا ، فكنتم تكذبون بما فيها .

= وهناك شحنات كهربية فى السحب والجو يتولد عنها البروق وإضاءة بعض السحب العالية جميع هذه الظواهر العديدة التى نشاهدها تجعلنا ندرك المعنى الخفى فى قوله سبحانه وتعالى : ﴿ إن فى خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار لآيات لأولى الألباب ﴾ .

ومما سبق يتضح أن الاختلاف فى الظواهر الفيزيائية إنما لأسباب لا يمكن للإنسان أن يتدخل فيها ، وأن الله – جل شأنه – هو الذى له اختلاف الليل والنهار ، ولا سبيل إطلاقا إلى تحكم الإنسان فى أى يوم على الليل والنهار . وهو – جل شأنه – بما وضع من موازين دقيقة وتقديرات محددة يتعاقب الليل والنهار ، ويختلف على مدار السنة طولا وقصرا .

99. Они будут продолжать опровержение твоего призыва к истине до тех пор, пока смерть не придёт к кому-либо из них, и тогда он раскается и скажет: "Господи, возврати меня в земной мир,

100. чтобы я вершил добрые деяния своим оставленным имуществом и возместил ими время, потерянное мною в суете". Но его просьба не будет принята. Это - лишь бесполезные слова, на которые ему не будет ответа. Даже если бы его просьбы и слова были приняты, он всё равно бы не сделал того, о чём он просит. Он никогда не вернётся в прежнюю жизнь. Ведь смерть является преградой между неверными и тем, чего они желают, до того Дня, когда Аллах их воскресит.

101. Когда настанет время воскрешения, они будут воскрешены Нашим повелением выйти из могил. Когда раздастся трубный глас, они придут поодиночке, и никому не пригодится родство с кем-то, и никто не будет расспрашивать другого о чём-то полезном. Ведь в тот День каждый будет занят только собой.

102. Деяния в ближайшем мире будут взвешены на чаше весов. У тех, кто придерживался истинного вероучения (акиды) и вершил добрые деяния, чаша добрых дел на весах Аллаха будет тяжёлой. И они будут счастливы и войдут в рай.

103. Те, кто не вершил добрых деяний, деяния которых легковесны на весах Аллаха, будут вечно в убытке и пребудут в аду. Они продали свои души шайтану.

104. Огонь ада будет жечь им лица, и они в нём будут мрачны от своей позорной участи.

105. Аллах упрекнёт их, говоря: "Разве Мои айаты не читались вам в земном мире, но вы опровергали их?"

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾
قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّى أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ
هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ إِنْ

١٠٦ - قالوا مقرين بخطئهم : ربنا كثرت معاصينا التى أورثتنا الشقاء ، وكنا بذلك ضالين عن طريق الثواب .

١٠٧ - وقالوا : ربنا ، أخرجنا من النار وأعدنا إلى الدنيا ، فإن عدنا إلى الكفر والعصيان كنا ظالمين لأنفسنا .

١٠٨ - قال الله لهم تحقيرا : اسكتوا أذلاء مهانين ، ولا تكلمونى مطلقا .

١٠٩ - ما ظلمتكم بل ظلمتم أنفسكم ، إذ كان المؤمنون الصالحون من عبادى يقولون فى الدنيا : ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الراحمين .

١١٠ - فكنتم تسخرون منهم دائما ، حتى أنساكم الاشتغال بالسخرية منهم ذكرى وعبادتى فلم تؤمنوا وتطيعوا ، وكنتم منهم تضحكون استهزاء .

١١١ - إنى جزيتهم اليوم بالفلاح ، لأنهم صبروا على سخريتكم وإيذائكم .

١١٢ - قال الله للكافرين : كم سنة عشتموها فى الدنيا ؟ .

١١٣ - قالوا ــ استقصارا لمدة معيشتهم بالنسبة لطول مكثهم فى العذاب ــ : عشنا يوما أو بعض يوم ، فاسأل من يتمكنون من العدّ ، لأنا مشغولون بالعذاب .

106. Неверные ответят, признаваясь в своей вине: "Господи, овладели нами наши пристрастия и грехи и привели нас к несчастию - отклонились мы с прямого пути и стали заблудшими".

107. Они добавят: "Господи! Выведи нас из огня и верни нас в земной мир! И если мы снова возвратимся к неверию и неповиновению, тогда мы будем неверными, несправедливыми к себе".

108. Аллах скажет им с презрением: "Молчите, вы, презренные и униженные, и не говорите со Мной!

109. Я был справедлив к вам, но вы сами - нечестивцы - были несправедливыми к себе. Ведь благочестивые верующие из Моих рабов говорили: "Господи наш! Мы уверовали, прости же нам и помилуй нас. Поистине, Ты - лучший из милующих!"

110. Вы над ними постоянно так издевались, что забыли поминать Меня и поклоняться Мне. Ведь вы не уверовали и не были послушны, а насмехались над верующими.

111. В этот День Я награжу их счастьем, ибо они терпеливо переносили ваши издевательства, насмешки и вред.

112. Аллах спросит неверующих: "Сколько лет вы жили в земном мире?"

113. Они ответят, чувствуя, как короток был срок их пребывания в земном мире по сравнению с длинным сроком их пребывания в наказании: "Мы пробыли лишь день или часть дня. Спроси, Господи, тех, кто вёл счёт - ангелов, - потому что мы нестерпимо мучаемся от наказания, которому мы подвергаемся".

لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ
الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا
حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾ وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

١١٤ - فيقول الله لهم ، ما عشتم فى الدنيا إلا زمنا قليلا . ولو أنكم كنتم تعلمون عاقبة الكفر والعصيان وأن متاع الدنيا قليل ، لآمنتم وأطعتم ..

١١٥ - أظننتم أننا خلقناكم بغير حكمة فأفسدتم فى الأرض . وظننتم أنكم لا تبعثون لمجازاتكم ؟ كلا .

١١٦ - العظمة لله ــ وحده ــ هو مالك الملك كله ، لا معبود بحق سواه ، هو صاحب العرش العظيم .

١١٧ - ومن يعبد مع الله إلـها آخر لا دليل له على استحقاقه العبودية . فإن الله يعاقبه على شركه لا محالة ، إن الكافرين لا يفلحون ، وإنما الذى يفلح هم المؤمنون .

١١٨ - وقل - يأيها النبى ــ داعيا الله ضارعا إليه - : يارب اغفر لى ذنبى وارحمنى فأنت خير الراحمين ، لأن رحمتك واسعة وقريبة من المحسنين .

114. Аллах им скажет: "Вы пробыли в земном мире совсем немного. Если бы только вы знали наказание, которое постигнет вас за неверие и неповиновение, и знали бы, что услады земного мира быстропреходящи, вы бы уверовали и повиновались Мне".

115. Неужели вы думаете, что Мы сотворили вас не по мудрости и что вы, совершая на земле порочное и греховное, не будете к Нам возвращены и наказаны?

116. Величие принадлежит Аллаху Единому! Хвала Ему! Превыше Он всех! Он - Владыка. Власть над всем принадлежит Ему ! И нет бога, кроме Него, который один заслуживает поклонения! Аллах - Властелин Великого Трона!

117. Того, кто поклоняется наряду с Аллахом другому божеству, не имея никакого довода о том, что он заслуживает поклонения, Аллах, несомненно, накажет за его неверие. Неверные не бывают счастливы. Счастливы бывают верующие.

118. Скажи (о пророк!), обращаясь к Аллаху и прося Его: "Господи! Прости мне мои грехи и помилуй меня! Поистине, Ты - наилучший из милосердных! Твоя милость обширна и охватывает добродеющих".

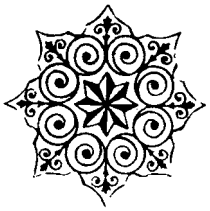

(٢٤) سورة النور مدنية
وآياتها ٦٤ نزلت بعد الحشر

بسم الله الرحمن الرحيم

سورة النور مدنية ، وآياتها ٦٤ ، بيَّن الله فيها وجوب تطهير المجتمع من الزنا ، وإشاعة الفاحشة بالفعل وبالقول بين المؤمنين ، وشرع لذلك عقوبات رادعة ، كما شرع فى زنا الزوج تشريعا خاصا لتوفر الثقة بين الزوجين . واستطرد الحديث فى الزنا إلى ذكر الكذب فى هذه المواقف ، وما يجب على المؤمنين إزاء قولة السوء التى يعوزها الدليل ، ويتبع ذلك بآداب دخول البيوت ، ومن له حق الاطلاع على زينة المرأة ، ويردف بعد الحكم بالدعوة العامة إلى العفة المطلقة . ثم يأتى نور الله ، وتذكر المساجد ، وتعرض أعمال الكافرين ، وأحوال المعاندين ، وبجانبهم تظهر أحوال المؤمنين . وبعد ذلك تعرض السورة آداب الأسر ، وأصحاب القرابات والأطفال والكبار فى شأن المخالطة ، ومن يحق للمرء أن يأكل على موائدهم . وفى ختامها ذكرت أوصاف المؤمنين إذا دعاهم الرسول لأمر جامع ، وبيَّنت كبير سلطانه تعالى وواسع علمه .

(24) АН-НУР
(Мединская сура)
СВЕТ

Во имя Аллаха Милостивого, Милосердного!

Сура "Свет" (ан-Нур) ниспослана в Медине и состоит из 64 айатов. В этой суре Аллах разъясняет необходимость очищать общество от прелюбодеяния и распространения мерзости и непристойности - на деле и в словах - среди верующих и установил поэтому сдерживающее их наказание, а также особые законы относительно прелюбодеяния замужней женщины и женатого мужчины, чтобы установить доверие между супругами. В ней также говорится о ложных обвинениях и высказываниях в этой связи и о том, как верующие должны поступать, услышав клеветнические, бездоказательные речи.

Аллах даёт в данной суре наставления о правильном поведении человека при входе в чужие дома и выходе из них.

В этой суре указывается, кому разрешено смотреть на украшения женщины, и призывается к целомудрию.

Затем подчёркивается, что Аллах - Свет небес и земли. В суре поднимается вопрос о мечетях.

В ней также рассказывается о деяниях неверных и состоянии тех, кто упорно отказывается поклоняться Аллаху, и наряду с этим выявляются деяния и состояние верующих.

Сура говорит о вежливом поведении и правильных отношениях в семье и о том, как должны вести себя родители (родственники), дети и пожилые люди, и у кого мужчине разрешено кушать и сидеть за столом.

В конце суры разъясняется, какими должны быть нравственные качества верующих, если посланник призовёт их к борьбе за общее дело, подчёркивается

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى

١ - هذه سورة أوحينا بها وأوجبنا أحكامها . ونزلنا فيها دلائل واضحة على قدرة الله ووحدانيته . وعلى أن هذا الكتاب من عند الله ، لتتعظوا بها .

٢ - ومن تلك الأحكام حكم الزانية والزانى فاضربوا كل واحد منهما مائة جلدة ولا يمنعنكم شيء من الرأفة بهما عن تنفيذ الحكم ، إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر . لأن مقتضى الإيمان إيثار رضا الله على الناس ، وليحضر تنفيذ الحكم فيهما جماعة من المؤمنين . ليكون العقاب فيه ردع لغيرهما .

= تعليق الخبراء على الآية ٢ - ٤ .

﴿ الزانية والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة ، ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر ، وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين . الزانى لا ينكح إلا زانية أو مشركة والزانية لا ينكحها إلا زان أو مشرك وحرم ذلك على المؤمنين والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة ، ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا ، وأولئك هم الفاسقون ﴾ :

الجرائم فى الشريعة الإسلامية هى محظورات زجر الله عنها بحد أو تعزير ، وهذه المحظورات تقع إما بارتكاب فعل نهى الشرع عن ارتكابه ، أو بترك فعل أمر الشرع بإتيانه . وعلة تحريم هذه المحظورات : أنها اعتداء على إحدى المصالح المعتبرة فى الإسلام ، ومصالح الإسلام المعتبرة خمس وهى :

١ - المحافظة على النفس .
٢ - المحافظة على الدين .
٣ - المحافظة على العقل .
٤ - المحافظة على المال .
٥ - المحافظة على العرض .

فالقتل مثلا اعتداء على النفس ، والردة اعتداء على الدين ، وتعاطى الخمر اعتداء على العقل ، والسرقة اعتداء على المال ، والزنا اعتداء على العرض .

وقَسَّمَ الفقهاء الجرائم إلى تقسيمات عدة تختلف باختلاف وجهات النظر إليها . ويهمنا بصدد التعليق على هذه الآية التقسيم من حيث جسامة العقوبة وكيفية تقديرها ، وهى تنقسم إلى أقسام ثلاثة :

великая власть Превышнего Аллаха - хвала Ему! - и то, что Его знание объемлет всё.

1. Эту суру Мы внушили и обязали сделать её заповедью для вас. В ней Мы низвели явные знамения, доказывающие могущество Аллаха, Его единство и то, что эта Книга ниспослана свыше от Аллаха, чтобы вы извлекали из неё уроки.

2. Среди наставлений этой суры - закон о прелюбодее и прелюбодейке, которых надо подвергнуть порке в сто ударов. Пусть жалость к ним не остановит вас исполнить этот закон, если вы веруете в Аллаха и в Последний день. Истинная вера требует, чтобы человек предпочитал повиновение Аллаху людям. Пусть при наказании присутствует группа верующих. Пусть это наказание удержит других от распутства* .

---

* **Сноска к 2-4 айатам. Комментарии знатоков об этих айатах** Преступление в исламском шариате - совершение того, что запретил Аллах либо категорически, либо установленными пределами, либо осуждением. Эти запрещённые поступки совершаются либо совершением запретного, либо пренебрежением к тому, что установлено шариатом. Причина запрещения этих поступков в том, что они подрывают принципы, установленные в исламе, а именно, следующие пять принципов:

1) защита души,
2) защита религии,
3) защита ума,
4) защита имущества,
5) защита чести.

Убийство, например, - преступление против души; отступничество (ар-рида) от ислама - подрыв религии; употребление опьяняющих напитков - разрушение ума, воровство - покушение на имущество, прелюбодеяние - покушение на честь.

Исламские правоведы (факихи) разделили все преступления на ряд видов, исходя из того, что все преступления отличаются друг от друга с точки зрения их тяжести. В комментарии к этой суре важно разделение преступлений с точки зрения их тяжести и как учитывать это при установлении меры наказания. Эти преступления могут быть трёх категорий:

١ - الحدود .
٢ - القصاص أو الدية .
٣ - التعزير .

أما الحدود فهى الجرائم التى تعتبر فى حد ذاتها اعتداء على حق الله ، أو يغلب فيها حق الله على حقوق العباد . ولذلك حددها الله ، وحُددت عقوبتها بنص فى القرآن أو فى السنة . أما جرائم القصاص والدية فهى جرائم تغلب فيها حقوق العباد . وتولى الله تحديد عقوبات بعضها بالنص ، وترك البعض لتقدير ولى الأمر . ومثلها جرائم الدماء . مثل جريمة القتل وقطع الأطراف والجراح .

أما جرائم التعزير فاكتفى الإسلام فيها بتقرير مجموعة من العقوبات بحديها الأخف والأشد وترك للوالى اختيار العقوبة فى كل جريمة بما يلائم ظروفها وحال الجماعة التى وقعت بها .

جرائم الحدود سبع :

١ - الزنا .
٢ - قذف المحصنات .
٣ - البغى .
٤ - السرقة .
٥ - قطع الطريق .
٦ - شرب الخمر .
٧ - الردة .

وقد حددها الله وجاء تعدادها جميعا فى نصوص القرآن ، كما حدد العقوبات عليها القرآن أيضا . عدا عقوبة الزانى المحصن « المتزوج » وهى الرجم ، وعقوبة شارب الخمر وهى ثمانون جلدة ، وعقوبة الردة وهى القتل ، فقد نصت عليها السنة . =

1) пределы (аль-худуд) - наказание за нарушение установлений религиозного закона относительно дозволенного и запретного,

2) возмездие (кисас) - наказание, налагаемое приговором за повреждение или увечье, и выкуп (дийа) - определённая плата за убийство, ранение или увечье,

3) осуждение (таазир) - наказание в административном порядке.

Пределы - это те преступления, которые сами по себе являются покушением, в основном, на законы, установленные Аллахом, или которые являются частичным покушением на законы Аллаха и на права людей. Эти виды преступлений определены Аллахом, и наказания за них определены в Коране и в Сунне. А возмездие и выкуп - это, в основном, покушение на права людей. Аллах разъяснил, каким должно быть наказание за некоторые из таких преступлений в Коране, и оставил часть для установления меры наказания стоящим у власти, например, наказание за убийство - увечье и отсечение конечностей.

Преступлениям, предполагающим осуждение (таазир), в исламе предусматривается только ряд наказаний: от максимального до минимального, а выбор наказания оставлен для стоящих у власти в зависимости от обстоятельств, в которых произошло преступление, и состояния общества, в котором оно совершилось.

Преступления, относящиеся к разряду пределов (аль-худуд), – нарушение постановлений религиозного закона– следующие:

1) прелюбодеяние,

2) обвинение в неверности и клевета на целомудрие,

3) распутство,

4) воровство,

5) разбой и бандитизм,

6) пьянство,

7) отступничество от ислама.

Аллах определил и перечислил все эти преступления и определил меру наказания за них в Коране, кроме наказания за прелюбодеяние, совершённое женатыми людьми, - побивание камнями, наказания за пьянство - восемьдесят ударов и наказания за отступничество от ислама - убить отступника. Эти три последних наказания были определены Сунной (поступки и высказывания пророка Мухаммада - один из источников мусульманского вероучения и права).

Государственные законы устанавливают за прелюбодеяния лёгкое наказание, как заключение в тюрьму, и поэтому так распространились среди

= وقد درجت القوانين الوضعية على الزجر فى جريمة الزنا بتوافه العقوبات كالحبس . فشاعت الفاحشة بين الناس ، وانتشر الفسق والفجور ، وهانت الأعراض ، وكثرت الأمراض واختلطت الأنساب . ومن عجب أن الشرائع الحديثة للبلاد المتمدينة تحمى هذه الجرائم ، ففى قانون العقوبات الفرنسى مثلا : الزانى والزانية غير المحصنين لا عقوبة عليهما ، ما داما قد بلغا سن الرشد . إذ حريتهما الشخصية تقتضى تركهما يفعلان بأنفسهما ما يشاءان . أما الزنا بالنسبة للمحصن من الرجال أو النساء فعقوبته الحبس . وليس للهيئة الاجتماعية متمثلة فى النيابة العامة أن تتصدى للجريمة بالتحقيق ، إلا بناء على طلب أحد الزوجين ، وترتب على اعتبار الجريمة واقعة على حق الزوج وحده أنه إذا أبلغ الحادث فله أن يسحب بلاغه ، فيقف التحقيق ، وله أن يعفو عن زوجته فتخرج من السجن قبل انقضاء العقوبة ولو صار الحكم عليها نهائيا .

ويعجب البعض على الإسلام التشدد فى عقوبة الزنا ، وكان أحرى بهم أن يدركوا أنه بقدر تغليظ العقوبة فى الإسلام تشدد فى طريق الإثبات . فبينما اكتفى فى ثبوت جريمة القتل بشهادة شاهدين عدلين ، حتم فى ثبوت جريمة الزنا شهادة أربعة شهود عدول ، رأوا الواقعة رأى العين . أو اعتراف الجانى ..

هذا . ونلاحظ أن القرآن الكريم أوجب علانية عقوبة الجلد ، لما فى ذلك من تشهير بالجانى وتخويف لغيره .

людей разврат, распутство и прелюбодеяния, которые ведут к покушению на честь, многочисленным болезням и смешению родства.

Удивительно, что современные законы в развитых странах защищают эти преступления. Например, во Франции закон не наказывает за прелюбодеяние холостяка и незамужнюю женщину, если они достигли совершеннолетия, считая, что их личная свобода даёт им право вести себя, как они хотят. По французскому закону наказание для женатых за прелюбодеяние - заключение в тюрьму. Прокуратура, представляющая права общества, не имеет права расследовать эти преступления без просьбы одной из сторон (мужа или жены). Несмотря на то, что прелюбодеяние, совершённое женой, считается преступлением, право мужа только в том, что он может заявить об этом в прокуратуру. Он же имеет право взять своё заявление обратно, если пожелает, и тогда расследование прекращается. Если жена была приговорена к определённому сроку заключения, он может простить свою жену и её выпустят на свободу из тюрьмы до того, как истечёт срок заключения.

Некоторые люди критикуют ислам за строгость наказания за прелюбодеяние. Они упускают из виду, что столь строгое наказание за прелюбодеяние производится только тогда, когда есть неопровержимые доказательства этого преступления, представленные четырьмя справедливыми свидетелями, видевшими это преступление воочию, или же признание самого преступника, в то время как в качестве доказательства преступления убийства принимаются свидетельства только двух справедливых свидетелей.

Отметим, что Священный Коран требует, чтобы наказание - нанесение ударов плетьми - за прелюбодеяние производилось публично, для того чтобы унизить преступника и устрашить других.

ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ ٱلْمُحْصَنَٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا۟ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَٱجْلِدُوهُمْ ثَمَٰنِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا۟ لَهُمْ
شَهَٰدَةً أَبَدًا ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٤﴾ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾
وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَٰجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَآءُ إِلَّآ أَنفُسُهُمْ فَشَهَٰدَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَٰدَٰتٍۭ بِٱللَّهِ ۙ إِنَّهُۥ لَمِنَ
ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٦﴾ وَٱلْخَٰمِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ ٱللَّهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٧﴾ وَيَدْرَؤُا۟ عَنْهَا ٱلْعَذَابَ أَن تَشْهَدَ
أَرْبَعَ شَهَٰدَٰتٍۭ بِٱللَّهِ ۙ إِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٨﴾ وَٱلْخَٰمِسَةَ أَنَّ غَضَبَ ٱللَّهِ عَلَيْهَآ إِن كَانَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٩﴾

٣ - الخبيث الذى من دأبه الزنا ، لا يرغب إلا فى نكاح خبيثة عرفت الزنا أو الشرك(١) ، والخبيثة التى من دأبها الزنا لا يرغب فى نكاحها إلا خبيث عرف بالزنا أو الشرك . ولا يليق هذا النكاح بالمؤمنين لما فيه من التشبه بالفسق والتعرض للتهم .

٤ - والذين يتهمون العفيفات النزيهات بالزنا ، ثم لم يأتوا بأربعة شهود يثبتون صدق الاتهام ، فعاقبوهم بالضرب ثمانين جلدة وبعدم قبول شهادتهم على أى شىء كان مدى الحياة ، فهؤلاء هم الجديرون باسم الخارجين خروجا شنيعا على حدود الدين .

٥ - لكن من تاب منهم فندم على هذه المعصية ، وعزم على الطاعة وظهر صدق توبته بصدق سلوكه ، فإن الله يتجاوز عن عقابه .

٦ - والذين يتهمون زوجاتهم بالزنا ، ولم يكن هناك عدد يشهد بصدق اتهامهم ، فيطالب الواحد منهم ليدفع عن نفسه الحد والعقوبة بأن يشهد بالله أربع مرات أنه صادق فى هذا الاتهام .

٧ - ويذكر فى المرة الخامسة أنه يستحق الطرد من رحمة الله إن كان من الكاذبين فى ذلك .

٨ - ولو سكتت الزوجة بعد ذلك أقيم عليها عقوبة الزنا ، ولكى تدفع عنها العقوبة يجب عليها أن تشهد بالله أربع مرات أن الزوج كاذب فى اتهامه إياها بالزنا .

٩ - وتذكر فى المرة الخامسة أنها تستحق أن ينزل بها غضب الله إن كان من الصادقين فى هذا الاتهام .

---

(١) هذا إذا لم يكن توبة ، والتفسير على هذا يكون لبيان طبائع أهل الشرك أو الزنا فى أنهم لا يرغبون إلا فى المفاسد . ورأى الحنابلة والظاهرية عدم صحة الزواج من الزانى أو الزانية قبل التوبة .

3. Порочный прелюбодей женится только на порочной прелюбодейке или многобожнице. А на порочной прелюбодейке женится только порочный прелюбодей или многобожник. И запрещено это верующим, так как это может бросить тень на верующего.

4. Те, которые возводят клевету на целомудренных, обвиняя их в прелюбодеянии, не представив четырёх свидетелей, которые могут подтвердить их обвинение, должны подвергнуться наказанию - восемьдесят ударов плетьми. И никогда больше не принимайте их свидетельства в чём-либо - они же преступили законы религии.

5. Тех, которые горько раскаялись в этом грехе, сожалели (о своём лжесвидетельстве) и решили повиноваться Аллаху, проявляя истинное раскаяние своими честными деяниями, Аллах прощает.

6. А те, которые обвиняют своих жён в прелюбодеянии, не имея достаточного числа свидетелей, подтверждающих правдивость этого обвинения, должны четыре раза поклясться именем Аллаха, что они правдивы в своих обвинениях,

7. а в пятый раз они должны поклясться, что будут лишены милости Аллаха, если они лгут.

8. Если жена не будет оправдываться после произнесения клятв о её неверности, то она подвергнется наказанию за прелюбодеяние, но если она поклянётся именем Аллаха четыре раза, что её ложно обвиняют в прелюбодеянии, она не подвергается наказанию.

9. В пятой клятве именем Аллаха она должна сказать, что она заслуживает гнев Аллаха, если муж говорит правду.

وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ وَأَنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ جَآءُو بِٱلْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ
لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُم مَّا ٱكْتَسَبَ مِنَ ٱلْإِثْمِ وَٱلَّذِى تَوَلَّىٰ كِبْرَهُۥ مِنْهُمْ لَهُۥ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿١١﴾ لَّوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ ٱلْمُؤْمِنُونَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا۟ هَٰذَآ إِفْكٌ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾ لَّوْلَا جَآءُو
عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا۟ بِٱلشُّهَدَآءِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ عِندَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْكَٰذِبُونَ ﴿١٣﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِى مَآ أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾ إِذْ تَلَقَّوْنَهُۥ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ

---

١٠ - ولولا تفضل الله عليكم ورحمته بكم - وإنه كثير قبول التوبة من عباده ، وحكيم فى كل أفعاله - لما شرع لكم هذه الأحكام ، ولعجل عقوبتكم فى الدنيا على المعصية .

١١ - إن الذين اخترعوا الكذب الصارف عن كل هداية بالنسبة لعائشة زوج النبى ﷺ - إذ أشاعوا حولها الإفك والكذب - هم جماعة ممن يعيشون معكم ، لا تظنوا هذه الحادثة شرا لكم بل هى خير لكم ، لأنها ميَّزت المنافقين من المؤمنين الخالصين ، وأظهرت كرامة المبرئين منها ، والمتألمين ، ولكل شخص من هذه الجماعة المتهمة جزاؤه على مقدار اشتراكه فى هذا الاتهام ، ورأس هذه الجماعة له عذاب عظيم لعظم جرمه .

١٢ - كان مقتضى الإيمان أنكم عند سماع خبر التهمة - أن يظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا من العفاف والطهر ، وأن يقولوا فى إنكار : هذا كذب واضح البطلان ، لتعلقه بأكرم المرسلين وأكرم الصديقات .

١٣ - هلاَّ أحضر القائمون بالاتهام أربعة شهود يشهدون على ما قالوا ؟ إنهم لم يفعلوا ذلك .. وإذا لم يفعلوا فأولئك فى حكم الله هم الكاذبون .

١٤ - ولولا تفضل الله عليكم ببيان الأحكام ، ورحمته لكم فى الدنيا بعدم التعجيل بالعقوبة وفى الآخرة بالمغفرة لنزل بكم عذاب عظيم بسبب الخوض فى هذه التهمة .

10. Если бы не благоволение Аллаха и не Его милосердие к вам, а ведь Он - прощающий Своих рабов и мудрый во всех делах, Он бы не установил для вас этих законов, а ускорил бы ваше наказание за этот грех в земном мире.

11. Те, которые измышляли клевету об Аише, жене пророка, - да благословит его Аллах и приветствует,- распространяя ложные и порочащие её слухи, живут среди вас. Не считайте эту ложь злом для вас, - нет! Она - добро для вас. Ведь по этому можно отличить лицемеров от искренних праведников. И не будет запятнана честь того, кто не виноват и переживал из-за этой клеветы. Для каждого человека из группы клеветников, виновной в измышлении и распространении этой клеветы, будет наказание, равное его участию в этом ложном обвинении, а тому из них, кто более всех содействовал распространению клеветы, уготовано великое наказание.

12. Почему же вы, верующие мужчины и женщины, услышав это ложное обвинение, не думали, как вам следовало бы поступить, - ведь вы являетесь примером чести, - и почему не отрицали эту явную клевету, касающуюся самого благородного посланника и самой благородной и правдивейшей из женщин?

13. И почему же обвиняющие не привели четырёх свидетелей, которые бы дали правдивые свидетельства о том, что они говорят? Ведь они этого не сделали и, если не сделают, значит - они лжецы перед Аллахом по Его законам.

14. И если бы не благосклонность Аллаха в разъяснении вам этих законов, и не Его милость в отмене спешки в наказании в земном мире и в указании на возможность прощения в будущей жизни, вы бы были подвергнуты великому мучению за ваше злословие и за то, что вошли в словоизвержение об этом.

بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُۥ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ ٱللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَآ أَن
نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَٰنَكَ هَٰذَا بُهْتَٰنٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ ٱللَّهُ أَن تَعُودُوا۟ لِمِثْلِهِۦٓ أَبَدًا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ
ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ ٱلْفَٰحِشَةُ فِى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ وَأَنَّ ٱللَّهَ رَءُوفٌ
رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾ * يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّبِعُوا۟ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۚ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ فَإِنَّهُۥ يَأْمُرُ

١٥ - فقد تناقلتم الخبر بألسنتكم وأشعتموه بينكم ، ولم يكن عندكم علم بصحته ، وتظنون أن هذا العمل هين ، لا يعاقب الله عليه ، أو يكون عقابه يسيرا مع أنه خطير يعاقب الله عليه أشد العقاب .

١٦ - وكان ينبغى عند سماع هذا القول الباطل أن تنصحوا بعدم الخوض فيه ، لأنه غير لائق بكم ، وأن تتعجبوا من اختراع هذا النوع القبيح الخطير من الكذب .

١٧ - وأن الله ينهاكم أن تعودوا لمثل هذه المعصية البتّة إن كنتم مؤمنين حقا ، لأن وصف الإيمان يتنافى معها .

١٨ - وينزل الله لكم الآيات الدالة على الأحكام واضحة جلية .. والله واسع العلم لا يغيب عنه شىء من أعمالكم ، وهو الحكيم فى كل ما يشرع ويخلق ، فكل شرعه وخلقه على مقتضى الحكمة .

١٩ - إن الذين يحبون أن يُفشوا ذكر القبائح ، فيفشوا معه القبائح نفسها بين المؤمنين ، لهم عذاب مؤلم فى الدنيا بالعقوبة المقررة ، وفى الآخرة بالنار إن لم يتوبوا . والله عليم بجميع أحوالكم الظاهرة والباطنة ، وأنتم لا تعلمون ما يعلمه .

٢٠ - ولولا فضل الله عليكم ورحمته بكم ، وأنه شديد الرأفة واسع الرحمة ، لمَا بيّن لكم الأحكام ، ولعجّل عقوبتكم فى الدنيا بالمعصية .

15. Вы пустословили об этом и распространяли клевету среди вас, хотя не было у вас верных знаний об этом. Вы считали, что это пустое, незначительное дело и что Аллах не накажет за это, но это очень серьёзное дело, и за него будет великое наказание Аллаха.

16. Услышав эту ложь, вам следовало бы посоветовать другим не говорить об этом. Ведь не подобает вам распространять явную ложь. Нужно было удивиться этой злой и серьёзной клевете.

17. Аллах увещевает вас никогда больше не совершать прегрешений, подобных этому, если вы истинные верующие. Ведь истинная вера несовместима с подобными поступками.

18. Аллах посылает вам айаты, указывающие на законы, которые очень важны и ясно изложены. Поистине, Всеведущий знает все ваши деяния. Он мудр в Своих законах, наставлениях и творениях. Весь Его шариат и всё Его творение - по Его мудрости.

19. Тем, кто любит, когда разглашают мерзостную ложь среди верующих (и этим распространяют мерзость и непристойность среди них), уготована мучительная кара, как установлено в шариате, в ближайшей жизни, а в дальней жизни уготован им адский огонь, если они не раскаются. Поистине, Аллах ведает все ваши дела, явные и скрытые, а вы не знаете того, что Он знает.

20. Если бы не благость Аллаха и Его милость, великая щедрость и милосердие к вам, Он бы не разъяснял вам наставления и законы шариата, а ускорил бы вам наказание в земном мире за ваш грех.

بِٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يُزَكِّى مَن يَشَآءُ ۗ
وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَأْتَلِ أُو۟لُوا۟ ٱلْفَضْلِ مِنكُمْ وَٱلسَّعَةِ أَن يُؤْتُوٓا۟ أُو۟لِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينَ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ
فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا۟ وَلْيَصْفَحُوٓا۟ ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَرْمُونَ

٢١ - يأيها الذين آمنوا حصّنوا أنفسكم بالإيمان ، ولا تسيروا وراء الشيطان الذى يجركم إلى إشاعة الفاحشة والمعاصى بينكم . ومن يتبع الشيطان فقد عصى ، لأنه يأمر بكبائر الذنوب وقبائح المعاصى ، ولولا فضل الله عليكم ورحمته بكم ببيان الأحكام وقبول توبة العصاة ما طهر أحد منكم من دنس العصيان . ولكن الله يطهر من يتجه إلى ذلك بتوفيقه للبعد عن المعصية ، أو مغفرتها له بالتوبة ، والله سميع لكل قول ، عليم بكل شىء ، ومجازيكم عليه .

٢٢ - ولا يحلف الصالحون وذوو اليسار منكم على أن يمنعوا إحسانهم ممن يستحقونه من الأقارب والمساكين والمهاجرين فى سبيل الله وغيرهم لسبب من الأسباب الشخصية ، كإساءتهم إليهم ، ولكن ينبغى أن يسامحوهم ويعرضوا عن مجازاتهم ، وإذا كنتم تحبون أن يعفو الله عن سيئاتكم فافعلوا مع المسىء إليكم مثل ما تحبون أن يفعل بكم ربكم ، وتأدبوا بأدبه فهو واسع المغفرة والرحمة[1] .

---

(١) نزلت هذه الآية عندما حلف أبو بكر الصديق أن يمنع معونته عن قريبه مسطح بن أثاثة لخوضه فى حديث الإفك حول السيدة عائشة رضى الله عنها .

21. О вы, которые уверовали, защитите себя истинной верой и не следуйте по стопам шайтана, который ведёт вас к распространению мерзости и грехов. Тот, кто следует по стопам шайтана, ослушивается Аллаха, ибо шайтан повелевает великие грехи и гнусность. Если бы не благоволение Аллаха и Его милосердие к вам, - ведь это Он разъяснил вам наставления и законы и принял покаяние неповинующихся Ему, - ни один из вас никогда бы не был очищен от греха ослушания и неповиновения. Однако Аллах очищает того, кто по Его дозволению повинуется Ему и отстраняется от грехов, или Аллах прощает его после покаяния. Поистине, Аллах - слышит и знает всякую вещь, и воздаст вам за это.

22. Пусть праведные и богатые из вас не клянутся, что не будут оказывать помощи тому, кто заслуживает её из родственников, бедных, переселившихся (из Мекки) для борьбы за прямой путь Аллаха и другим по личным причинам, например, вражде. Нужно прощать этих людей и не наказывать их, если вы желаете, чтобы Аллах простил вам ваши грехи. Сделайте тому, кто вам навредил, то, чего вы желаете, чтобы Аллах сделал вам. Простите их, руководствуясь наставлениями Аллаха. Поистине, милосердие и щедрость Аллаха бесконечны![*]

---

[*] Этот айат был ниспослан, когда правдивейший Абу Бакр (отец Аиши) поклялся не оказывать помощи своему родственнику Мистаху, распространявшему клевету об Аише - да будет доволен ею Аллах!

ٱلْمُحْصَنَٰتِ ٱلْغَٰفِلَٰتِ ٱلْمُؤْمِنَٰتِ لُعِنُوا۟ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ
أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ ٱللَّهُ دِينَهُمُ ٱلْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ
ٱلْحَقُّ ٱلْمُبِينُ ﴿٢٥﴾ ٱلْخَبِيثَٰتُ لِلْخَبِيثِينَ وَٱلْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَٰتِ ۖ وَٱلطَّيِّبَٰتُ لِلطَّيِّبِينَ وَٱلطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَٰتِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ
مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَدْخُلُوا۟ بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ

٢٣ - إن الذين يتهمون بالزنا المؤمنات العفيفات الطاهرات ، اللاتى لا يظن فيهن ذلك ، بل هن لفرط انصرافهن إلى الله غافلات عما يُقال عنهن ، يُبعدهم الله عن رحمته فى الدنيا والآخرة ، ولهم عذاب عظيم إن لم يتوبوا .

٢٤ - ذلك العذاب يكون يوم القيامة حيث لا سبيل للإنكار ، بل يثبت عليهم ما ارتكبوا إذ تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بجميع ما ارتكبوا من آثام ، وذلك بظهور آثار مما عملوه عليها ، أو بأن يُنطقها الله الذى أنطق كل شىء .

٢٥ - فى ذلك اليوم يعاقبهم الله العقاب المقرر لهم كاملا غير منقوص ، وهنا يعلمون علم اليقين ألوهية الله وأحكام شريعته ، وصدق وعده ووعيده ، لأن كل ذلك واضح دون خفاء .

٢٦ - الخبيثات من النساء يَكُنَّ للخبيثين من الرجال ، والخبيثون من الرجال يكونون للخبيثات من النساء ، وكذلك الطيبات من النساء يكن للطيبين من الرجال ، والطيبون من الرجال يكونون للطيبات من النساء ، فكيف يُتصور السوء فى الطيبة المصونة زوج الطيب الأمين ، والرسول الكريم ﷺ وهؤلاء الطيبون مبرَّأون من التهم التى يصفهم بها الخبيثون ، ولهم مغفرة من الله على ما لا يخلو منه البشر من صغار الذنوب ، وإكرام عظيم بنعيم الجنة ، وطيباتها .

23. Тех, которые возводят ложные обвинения в прелюбодеянии на верующих, целомудренных, чистых, невинных женщин, - обвинения, о которых нельзя даже подумать, - а эти женщины так предались Аллаху своей душой, что и не замечают того, что о них говорят, Аллах лишит Своей милости в ближайшей жизни и в дальней жизни. Для них (этих лжецов) будет уготовано великое наказание, если они не раскаются.

24. Это наказание будет в Судный день. Тогда нельзя будет отрицать грех и тогда языки, руки и ноги будут свидетельствовать против них о всех грехах, которые они творили, так как на этих частях тела будут видны следствия этих грехов, или Аллах повелит этим частям тела заговорить, как Он может сделать с любой вещью.

25. В тот День Аллах полностью воздаст грешникам наказанием, определённым им. Они наверняка убедятся в Божественности Аллаха, в законах Его шариата и истинности Его обещания и предупреждения, потому что всё это - ясная истина без какого-либо утаивания.

26. Мерзкие женщины - мерзким мужчинам, мерзкие мужчины - мерзким женщинам, добропорядочные женщины - добропорядочным мужчинам, добропорядочные мужчины - добропорядочным женщинам. Как можно представить гнусность в хорошей, правдивой, чистой жене хорошего, честного мужа, благородного посланника (да благословит его Аллах и приветствует!)? Эти добропорядочные люди непричастны к тому, что дурные им ложно приписывают. Аллах простит их за мелкие грехи, присущие человеку. Им уготован рай благоденствия и благородный надел от щедрости Аллаха.

تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ
يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
أَن تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾ قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ
أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ

٢٧ - يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا ليست لكم إلا بعد أن تطلبوا الإذن من ساكنيها ويسمح لكم بالدخول ، وبعد أن تلقوا تحية السلام على ساكنيها . ذلك الاستئذان والسلام خير لكم من الدخول بدونهما ، وشرعه الله لكم لتتعظوا وتعملوا به .

٢٨ - فإن لم تجدوا فى هذه البيوت أحدا يأذن لكم ، فلا تدخلوا حتى يجىء من يسمح لكم به . وإن لم يُسمح لكم وطُلب منكم الرجوع فارجعوا ، ولا تلحوا فى طلب السماح بالدخول ، فإن الرجوع أكرم بكم وأطهر لنفوسكم ، والله مطلع على كل أحوالكم ومجازيكم عليها فلا تخالفوا إرشاداته .

٢٩ - وإذا أردتم دخول بيوت عامة غير مسكونة بقوم مخصوصين ، ولكم فيها حاجة كالحوانيت والفنادق ودور العبادة فلا حرج عليكم إن دخلتم بدون استئذان ، والله عالم أتم العلم بجميع أعمالكم الظاهرة والباطنة فاتقوا مخالفته .

٣٠ - قل ــ يأيها النبى ــ للمؤمنين - محذرا لهم مما يوصل إلى الزنا ويعرضُ للتهم - : إنهم مأمورون ألا ينظروا إلى ما يحرم النظر إليه من عورات النساء ومواطن الزينة منهن ، وأن يصونوا فروجهم بسترها وبعدم الاتصال غير المشروع ، ذلك الأدب أكرم بهم وأطهر لهم وأبعد عن الوقوع فى المعصية والتهم . إن الله عالم أتم العلم بجميع ما يعملون ومجازيهم على ذلك .

27. О вы, которые уверовали! Не входите в чужие дома, не испросивши позволения живущих в них и не дождавшись разрешения войти. И приветствуйте обитателей их пожеланием мира. Это разрешение и приветствие - достойнее для вас, чем войти без них. Аллах наставляет вас на это, чтобы вы послушались Его назидания и следовали ему.

28. Если же вы не найдёте в этих домах никого, кто бы мог вам разрешить войти, то не входите, пока не придёт кто-либо, кто разрешит вам войти. Если же вам не разрешат войти, а потребуют, чтобы вы вернулись, то возвратитесь и больше не просите разрешения войти, так как возвращение - достойнее для вас и благопристойнее для ваших душ. Аллах знает все ваши дела и воздаст вам за них! Так не ослушивайтесь же Его назиданий!

29. Если вы пожелаете войти в нежилое помещение общего пользования, где у вас будет нужда в чём-то, как магазин, гостиница и места для поклонения Богу, то нет на вас греха, если вы войдёте туда без разрешения. Аллах полностью знает ваши дела, тайные и явные. Будьте богобоязненными и не нарушайте назиданий Аллаха!

30. Предупреждай, о пророк, верующих мужчин о том, что ведёт к прелюбодеянию или к обвинению в нём, и скажи им, что им приказано потуплять взоры и не смотреть на запрещённые места женщин и на места, где они носят украшения, и сохранять своё целомудрие. Такое поведение - достойнее для них и отдаляет их от грехов и обвинения. Поистине, Аллах осведомлён о том, что они вершат, и воздаст им за это.

مِنْ أَبْصَٰرِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ ءَابَآئِهِنَّ أَوْ ءَابَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَٰنِهِنَّ أَوْ بَنِىٓ إِخْوَٰنِهِنَّ
أَوْ بَنِىٓ أَخَوَٰتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُنَّ أَوِ ٱلتَّٰبِعِينَ غَيْرِ أُو۟لِى ٱلْإِرْبَةِ مِنَ ٱلرِّجَالِ أَوِ ٱلطِّفْلِ ٱلَّذِينَ
لَمْ يَظْهَرُوا۟ عَلَىٰ عَوْرَٰتِ ٱلنِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ
ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنكِحُوا۟ ٱلْأَيَٰمَىٰ مِنكُمْ وَٱلصَّٰلِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا۟ فُقَرَآءَ

٣١ - قل أيضا ــ يأيها النبى ــ للمؤمنات : إنهن مأمورات بكف نظرهن عما يحرم النظر إليه ، وأن يَصُنَّ فروجهن بالستر وعدم الاتصال غير المشروع ، وألا يُظهرن للرجال ما يغريهم من المحاسن الخلقية والزينة كالصدر والعضد والقلادة ، إلا ما يظهر من غير إظهار كالوجه واليد ، واطلب منهن ــ يأيها النبى ــ أن يسترن المواضع التى تبدو من فتحات الملابس ، كالعنق والصدر ، وذلك بأن يسترن عليها أغطية رؤوسهن ، وألا يسمحن بظهور محاسنهن ، إلا لأزواجهن والأقارب الذين يحرم عليهم التزوج منهن تحريما مؤبدا كآبائهن أو آباء أزواجهن ، أو أبنائهن أو أبناء أزواجهن من غيرهن ، أو إخوانهن أو أبناء إخوانهن ، ومثل هؤلاء صواحبهن ، وسواء منهن الحرائر والمملوكات ، والرجال الذين يعيشون معهن ، ولا يوجد عندهم الحاجة والميل للنساء كالطاعنين فى السن ، وكذلك الأطفال الذين لم يبلغوا حد الشهوة ، واطلب منهن أيضا ألا يفعلن شيئا يلفت أنظار الرجال إلى ما خفى من الزينة ، وذلك كالضرب فى الأرض بأرجلهن ، ليسمع صوت خلاخيلهن المستترة بالثياب ، وتوبوا إلى الله جميعا ــ أيها المؤمنون ــ فيما خالفتم فيه أمر الله ، والتزموا آداب الدين لتسعدوا فى دنياكم وأخراكم .

31. Скажи (о пророк!) верующим женщинам, что им приказано потуплять свои взоры и не смотреть на то, на что Аллах запретил смотреть, и, оберегая своё целомудрие, избегать незаконных сношений и не показывать обольщающую мужчин телесную красоту - места, на которых женщина носит украшения: грудь, шея, плечи, кроме лица и кистей рук. Скажи им (о пророк!), чтобы они прикрывали места, видные в вырезе одежды, как грудь и шея, набрасывая на них свои головные покрывала. Пусть они не показывают своей красы никому, кроме своих мужей и родственников, за которых им запрещено по шариату выходить замуж: отцов, отцов своих мужей, своих сыновей, сыновей своих мужей от других жён или своих братьев и сыновей своих братьев, или сыновей своих сестёр, или женщин-подруг (мусульманок), из свободных или невольниц, или своих служанок - свободных или рабынь, или слуг из мужчин, не испытывающих нужды в женщинах, например, очень старых мужчин-слуг, а также детей, которых не постигло влечение к женщинам. Потребуй от них также (о пророк!) не делать того, что может привлечь внимание мужчин к скрытым под одеждой украшениям, например, когда бьют ногой об пол, чтобы звук браслетов на ногах, скрытых под одеждой, был слышен. Обращайтесь (о верующие!) к Аллаху с покаянием и просите у Него прощения за то, в чём вы нарушили Его наставления и законы, и следуйте нравственным назиданиям религии, чтобы вы были счастливыми в своей ближайшей жизни и в дальней жизни!

يُغْنِهِمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ ٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ ۗ
وَٱلَّذِينَ يَبْتَغُونَ ٱلْكِتَٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَءَاتُوهُم مِّن مَّالِ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ
ءَاتَىٰكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا۟ فَتَيَٰتِكُمْ عَلَى ٱلْبِغَآءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا۟ عَرَضَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ
فَإِنَّ ٱللَّهَ مِنۢ بَعْدِ إِكْرَٰهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ ءَايَٰتٍ مُّبَيِّنَٰتٍ وَمَثَلًا مِّنَ ٱلَّذِينَ خَلَوْا۟ مِن قَبْلِكُمْ
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾ * ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِۦ كَمِشْكَوٰةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ ٱلْمِصْبَاحُ فِى زُجَاجَةٍ
ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِىٓءُ وَلَوْ لَمْ

٣٢ - وأعينوا على الابتعاد عن الزنا وما يوصل إليه بتزويج من لم يتزوج من رجالكم ونسائكم ، ومَنْ كان صالحا من مماليككم كذلك ، ولا تكن رقة الحال مانعة من الزواج فإن الله سيهيىء وسائل العيش الكريم لمن أراد إعفاف نفسه ، وفضل الله واسع لا يثقله إغناء الناس ، هو عالم أتم العلم بالنيات وبكل ما يجرى فى الكون .

٣٣ - والذين لا يجدون القدرة على مؤونات الزواج ، فعليهم أن يسلكوا وسيلة أخرى كالصوم والرياضة(١) . والأعمال العقلية ، يعفون بها أنفسهم ، حتى يهيىء الله لهم من فضله ما يستطيعون به الزواج ، والأرقاء الذين يطلبون منكم تعاقدا على دفع عوض مقابل عتقهم ، عليكم أن تجيبوهم إلى ما طلبوا ، إنْ علمتم أنهم سيصدقون فى الوفاء ويستطيعون الأداء ، وعليكم أن تساعدوهم على الوفاء بماتعاقدوا عليه ، وذلك مثلا بتخفيض ما اتفقتم عليه أو إعطائهم بعض المال الذى أنعم الله به عليكم بالزكاة أو الصدقة . ويحرم عليكم أن تجعلوا جواريكم وسيلة للكسب الدنيوى الرخيص باحتراف البغاء وتكرهوهن عليه . كيف تُكرِهُونَهُنَّ وهن يردن العفاف ؟ ومن يكرههن عليه فإن الله يغفر لمن يكرهونهن بالتوبة عن الإكراه . لأن الله واسع المغفرة والرحمة .

٣٤ - ولقد أنزلنا إليكم فى هذه السورة وغيرها آيات واضحة مبينة للأحكام ، وأنزلنا إليكم أمثلة من أحوال السابقين . وإرشادات ومواعظ يفيد منها الخائفون من الله .

---

(١) يفسر هذا قول النبى ﷺ : يا معشر الشباب من استطاع منكم الباءة - أى مؤونات الزواج - فليتزوج فإنه أغض للبصر وأحصن للفرج ، ومن لم يستطع فعليه بالصوم فإنه له وجاء .

32. Помогайте людям избежать прелюбодеяния и всего ведущего к этой мерзости. Поэтому соединяйте браком неженатых мужчин и незамужних женщин и праведных из ваших рабов и рабынь. Пусть недостаток не будет причиной, препятствующей браку. Поистине, Аллах дарует надел для хорошей жизни тем, кто желает хранить своё целомудрие. Щедрость Аллаха велика, и не отяготит Его обогащение людей. Ведь Он знает намерения людей, и Его знание объемлет всякую вещь во Вселенной.

33. Тем, которые не имеют возможности вступить в брак из-за недостатка денежных средств, необходимых для такого соединения, следует идти добрым путём: пусть соблюдают пост и занимаются спортом* и умственным трудом, что позволяет хранить целомудрие, пока Аллах не обогатит их из Своей щедрости, и они смогут жениться. Рабов, которые готовы заплатить за запись о свободе, вы должны освободить, если вы знаете, что они честно выполнят то, что от них требуется и что они смогут это сделать. Вы должны помочь им в выполнении этого соглашения, уменьшая договорённую стоимость, или дать им деньги в виде очистительной милостыни или из того, что даровал вам Аллах как “садака” (милость). Не делайте своих рабынь средством для извлечения дешёвой выгоды в земном мире, принуждая их к распутству. Как же можно насильно принуждать к распутству тех, которые стремятся сберечь своё целомудрие? Тех невольниц, которые были принуждены предаваться распутству, Аллах простит, если они раскаются. Поистине, Аллах - Прощающий, Милосердный!

34. Мы ниспослали вам этот айат, а также другие ясные айаты Корана, в которых разъясняются законы и наставления, и привели вам примеры из истории предыдущих народов в качестве притч, назиданий, наставлений и предупреждения для богобоязненных, которые страшатся гнева Аллаха.

---

* Пророк Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - сказал: "О молодёжь! Кто из вас имеет средства, чтобы вступить в брак, =

تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ يَهْدِي ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَٰلَ لِلنَّاسِ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

٣٥ - الله مصدر النور فى السموات والأرض ، فهو منورهما بكل نور حسى نراه ونسير فيه ، وبكل نور معنوى ، كنور الحق والعدل ، والعلم والفضيلة ، والهدى والإيمان ، وبالشواهد والآثار التى أودعها مخلوقاته ، وبكل ما يدل على وجود الله ويدعو إلى الإيمان به سبحانه ، وَمَثَلُ نوره العظيم وأدلته الباهرة فى الوضوح ، كمثل نور مصباح شديد التوهج ، وضع فى فجوة من حائط تساعد على تجميع نوره ووفرة إضاءته ، وقد وضع المصباح فى قارورة صافية لامعة لمعان كوكب مشرق ، يتلألأ كالدر ويستمد المصباح وقوده من زيت شجرة كثيرة البركات ، طيبة التربة والموقع ، هى شجرة الزيتون المغروسة فى مكان معتدل متوسط ، فلا هى شرقية فتحرم حرارة الشمس آخر النهار ، ولا هى غربية فتحرمها أول النهار ، بل هى على قمة الجبل ، أو فى فضاء الأرض تفيد من الشمس فى جميع أجزاء النهار ، يكاد زيت هذه الشجرة لشدة صفائه يضىء ، ولو لم تمسسه نار المصباح ، فهذه العوامل كلها تزيد المصباح إضاءة فوق إضاءة ، ونورا على نور .

وهكذا تكون الشواهد المنبثة فى الكون حسيها ومعنويها آيات واضحة لا تدع مجالا للشك فى وجود الله ، وفى وجوب الإيمان به وبرسالاته وما جاءت به . والله يوفق من يشاء إلى الإيمان عن طريقها ، إذا حاول الانتفاع بنور عقله . وقد أتى الله بالأمثلة المحسوسة ليسهل إدراك الأمور المعقولة ، وهو سبحانه واسع العلم ، يعلم مَن نظر فى آياته ، ومن أعرض واستكبر ، ومجازيهم على ذلك .

35. Аллах - источник Света небес и земли. Он освещает их осязаемым светом, который мы видим и в котором мы живём, а также духовным Светом - Светом истины и справедливости, Светом знания и добродетели, чести и нравственности, Светом прямого пути и истинной веры, Светом ясных знамений и доказательств, вложенных Аллахом в Свои создания, Светом, ясно проявляющимся во всякой вещи, доказывающей существование Аллаха, Светом, призывающим к вере в Него - хвала Ему Всевышнему! Его Свет и явные знамения подобны сверкающему свету светильника, стоящего в нише. Этот светильник в стекле, прозрачном и блестящем, как яркая звезда, сверкающая и сияющая, словно жемчуг. Светильник зажигается от масла благословенного дерева, растущего в доброй земле, а именно - оливкового дерева, растущего не на востоке, где нет солнечных лучей в конце дня, и не на западе, где нет солнечных лучей в начале дня. Это дерево растёт на вершине горы или на просторе земли, где солнце светит целый день. Масло этого дерева такое чистое и прозрачное, что готово воспламениться даже без прикосновения огня светильника. Всё это увеличивает свет в светильнике, и накладывается освещённое на освещённое и свет на свет. Таковы знамения, распространённые во Вселенной, - материальные и духовные знамения. Это - явные знамения, которые не оставляют места для сомнения в существовании Аллаха и необходимости уверовать в Него, в Его Послания и в то, что в них ниспослано. Аллах ведёт того, кого Он пожелает, к вере постижением этих знамений, если он старается пользоваться Светом разума. Аллах приводил для людей ясные притчи и примеры, чтобы они постигали их разумом. Он Всеведущ и знает того, кто смотрел на Его знамения, и того, кто пренебрегал ими, высокомерно возносясь, и Он воздаст им за это.

= пусть женится, ибо это помогает потуплять свои взоры и хранить своё целомудрие, не предаваясь страстям. Тот, кто не имеет средства, пусть постится. Ведь пост его хранит и оберегает".

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ ٱللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا ٱسْمُهُۥ يُسَبِّحُ لَهُۥ فِيهَا بِٱلْغُدُوِّ وَٱلْآصَالِ ﴿٣٦﴾ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَٰرَةٌ
وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ وَإِقَامِ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءِ ٱلزَّكَوٰةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ ٱلْقُلُوبُ وَٱلْأَبْصَٰرُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ
ٱللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا۟ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَعْمَٰلُهُمْ
كَسَرَابٍۭ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ ٱلظَّمْـَٔانُ مَآءً حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَهُۥ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَوَجَدَ ٱللَّهَ عِندَهُۥ فَوَفَّىٰهُ حِسَابَهُۥ ۗ وَٱللَّهُ سَرِيعُ
ٱلْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِى بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ

٣٦ - إن هناك قوما يُسبِّحون الله ويعبدونه فى المساجد التى أمر الله أن تبنى وتعظم وتُعمر بذكر الله ، وهم يترددون عليها صباحا ومساء .

٣٧ - لا تشغلهم الدنيا بما فيها من بيع وشراء عن تذكر الله ومراقبته ، فهم يقيمون الصلاة ويؤدون الزكاة خائفين من يوم القيامة الذى لا تستقر فيه القلوب من القلق والهم ، وترقب المصير وتتلفت فيه الأنظار فى حيرة ودهشة من غرابة المنظر وشدة الهول .

٣٨ - وستكون عاقبة عملهم مكافأة الله لهم أحسن مكافأة على أعمالهم الطيبة ، وأن يتفضل عليهم بأكثر مما يستحقون ، فهو سبحانه واسع الفضل يعطى من يشاء من عباده الصالحين عطاء كبيرا ، لا يحاسبه عليه أحد ولا يستطيع العادُّون إحصاءه .

٣٩ - والذين جحدوا وأنكروا يحسبون أنهم يحسنون صنعا ، وأن أعمالهم الحسنة ستفيدهم يوم القيامة ، ولكنهم مخطئون فى ظنهم هذا ، فمثل أعمالهم فى بطلانها وعدم جدواها كمثل اللمعان الذى يحدث من سقوط أشعة الشمس وقت الظهيرة على أرض مستوية فى بيداء ، فيظنه العطشان ماء ، حتى إذا جاءه لم يجده شيئا نافعا كما كان يظنه ، كذلك أعمال الكفار يوم الجزاء ستكون هباء منثوراً ، وسيجد الكافر عقاب الله ينتظره واقعا تاما لا نقص فيه ، إن حساب الله آت لا ريب فيه ، وهو سبحانه سريع فى حسابه لا يبطىء ولا يخطىء[1] .

---

(١) ﴿ والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه ، والله سريع الحساب ﴾ : السراب مجرد ظاهرة ضوئية سببها انعكاس الشعاع المنبعث من الأجسام المضيئة ، وارتداده من سطح أرض فسيحة جرداء عندما علا التدريج بحذاء سطح الأرض ، متباعدا عنها قليلا قليلا ترتفع درجة حرارتها أثناء النهار ، فيتجه الشعاع المنعكس حتى يصل إلى الراصد . وعندها ترى صور الأجسام المضيئة مقلوبة كما لو كانت مرآة كبيرة ممتدة . وكذلك ترى صورة السماء الزرقاء الصافية كأنها بحيرة من الماء على أديم الأرض ، بينما تظهر باقى الأجسام مثل الأشجار والنخيل مقلوبة مؤكدة وجود الماء ظاهريا . وتبدو ظاهرة السراب هذه بأجلى معانيها إذا ما بلغ الفرق بين درجة حرارة سطح الأرض والهواء الملامس له بضع درجات مئوية . وهى تشاهد عادة فى الصحارى والمناطق المنبسطة والطرق الصحراوية المستقيمة المعبدة بالأسفلت . ومما سبق يتضح أن السراب مجرد وهم .

36. Люди, восхваляющие Аллаха и поклоняющиеся Ему в мечетях, которые Он дозволил возвести, чтобы люди посещали их и поминали Его имя, ходят в мечети по утрам и по вечерам.

37. Земной мир, торговля и купля не отвлекают их от поминания Аллаха. Они совершают молитву, раздают закят (очистительную милостыню), страшатся Судного дня, в который сердца будут беспокойны от волнения, страха и ожидания своей судьбы, а глаза широко раскроются в растерянности и удивлении при виде ужасов страшной и странной картины.

38. За их добродеяния Аллах воздаст им высшей наградой от Своей щедрости, воздаст им большим, чем они заслуживают. Хвала Аллаху Всевышнему! Поистине, Аллах щедр и без счёта дарует большой надел тому из Своих праведных рабов, кому пожелает.

39. Те, которые не уверовали и отрицали истинную веру, думая, что совершаемые ими добродеяния помогут им в День воскресения, ошибаются. Ведь их деяния тщетны и подобны миражу* - блеску от солнечных лучей в полдень на просторе пустыни, - который жаждущий принимает за воду, но когда подходит ближе, не находит ничего полезного. Таковыми в Судный день будут и деяния тех, кто не уверовал. Их деяния пойдут прахом, и неверный увидит, что наказание Аллаха полностью ждёт его. Аллах - хвала Ему! - быстр в расчёте, не замедлит и не ошибётся.

---

* Научные исследования доказали, что мираж - просто оптический обман.

بَعْضٍ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهُۥ لَمْ يَكَدْ يَرَىٰهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ ٱللَّهُ لَهُۥ نُورًا فَمَا لَهُۥ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُۥ مَن
فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلطَّيْرُ صَٰٓفَّٰتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُۥ وَتَسْبِيحَهُۥ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾
وَلِلَّهِ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَإِلَى ٱللَّهِ ٱلْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يُزْجِى سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُۥ ثُمَّ يَجْعَلُهُۥ رُكَامًا

٤٠ – وهذا مثل آخر لأعمال الكفار ، فمثلها كمثل ظلمات البحر الواسع العميق ، الذى تتلاطم أمواجه عند هياجه ، ويعلو بعضها فوق بعض ويغطيها سحاب كثيف قاتم يحجب النور عنها ، فهذه ظلمات متراكمة ، لا يستطيع راكب البحر معها أن يرى يده ولو أدناها إلى بصره ، فوقف حائرا مبهوتا ، وكيف يرى شيئا ويخلص من هذه الحيرة بدون نور يهديه فى مسيره ويقيه الارتطام والهلاك ؟ وكذلك الكافرون لا يفيدون من أعمالهم ، ولا يخرجون من عمايتهم وضلالهم ، ولا ينجون بأنفسهم إلا بنور الإيمان ، ومن لم يوفقه الله لنور الإيمان ، فليس له نور يهديه إلى الخير ويدله على الطريق المستقيم ، فيكون من الهالكين .

٤١ – ألم تعلم ــ يأيها النبى ــ علما يقينيا أن الله يخضع له كل مَن يسكن السموات والأرض ، ويخضع له الطير كذلك ، وهى باسطة أجنحتها . فهذه المخلوقات كلها خاضعة لأمر الله وتدبيره ، تنزهه عن الشريك وعن كل ما لا يليق ، وكل منها قد علم بإلهام الله ما وجب عليه من خضوع وتنزيه وأداء لوظيفته فى الحياة ، والله من ورائهم عالم أتم العلم بصلاة كل مصل وتسبيح كل مسبح ، وجميع ما يفعله العباد : فكيف لا يؤمن به الكافرون ؟ .

٤٢ – والله ــ وحده ــ هو مالك السموات والأرض وما فيهن ، وصاحب السلطان عليها وكلهم راجع إليه يوم القيامة للحساب والجزاء .

تعليق الخبراء على الآية ٤٠ :

﴿ أو كظلمات فى بحر لجى يغشاه موج من فوقه موج من فوقه سحاب ، ظلمات بعضها فوق بعض ، إذا أخرج يده لم يكد يراها ، ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور ﴾ . تجمع هذه الآية الكريمة أهم ظواهر عواصف البحر ، فالمعروف عن عواصف البحار العميقة أو المحيطات تنطلق فيها أمواج مختلفة الطول أو السعة أو الارتفاع ، بحيث يبدو الموج منطلقا فى طبقات بعضها فوق بعض ، فيحجب ضياء الشمس ، لما تثيره هذه العواصف من سحب ركامية سميكة تحجب بدورها ضوء الشمس ويخيم معها الظلام فى سلسلة من عمليات الإعتام التى تصل إلى حد انعدام رؤية الأجسام رغم سلامة النظر . ولما كانت نشأة الرسول – ﷺ – فى البادية .. فان ورود الدقائق العلمية على لسانه وحيا من الله ، دليل على أن القرآن الكريم من عند الله ، وعلى أنه معجزة هذا الرسول الكريم .

40. Ещё другой пример о тщетных деяниях нечестивцев. Ведь деяния тех, кто не уверовал, - словно мрак широкого глубокого моря, в котором бушуют волны, и одна волна накрывает другую, когда море бывает бурным, и над ним мрак - густые тёмные облака, одно поверх другого, через которые не проникает свет. Эта пучина мрака, в которой плывущий на пароходе не может увидеть свою руку, даже приблизив её к своим глазам. И тогда он стоит в растерянности и с ужасом думает, как ему избавиться от этой растерянности, не имея Света, ведущего его по прямому пути и защищающего от гибели. Ведь таково состояние неверных, которые не извлекают никакой пользы от своих деяний и не могут выйти из слепоты (сердца) и заблуждения, и нет им спасения без истинной веры. У того, кому Аллах не даровал Света веры, нет Света, направляющего его к благу и добру и ведущего его к прямому пути. И будет он среди тех, кто обречён на гибель.

41. Неужели ты, о пророк, не знаешь достоверно, что Аллаху покорно всё, что в небесах и на земле, и птицы, летящие стаями, раскрыв свои крылья. Все это подчиняется Аллаху и Его повелениям. Аллах Безупречен и превыше тех соучастников, которых Ему приписывают. Каждая тварь по внушению Аллаха знает, что следует подчиняться Ему, восхвалять Его Безупречного и выполнять свои обязанности в этой жизни. Аллах наблюдает за людьми и точно знает молитву каждого молящегося и восхваление каждого славящего, и всё, что вершат Его рабы. Как же неверные не уверовали в Него?

42. Аллаху Единому принадлежит власть над небесами и землёй, а также над всем, что на них. Он - Владыка над всеми. Все вернутся к Нему в Судный день для расчёта и воздаяния.

فَتَرَى ٱلْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَٰلِهِۦ وَيُنَزِّلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِنۢ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَصْرِفُهُۥ عَن
مَّن يَشَآءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِۦ يَذْهَبُ بِٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ ٱللَّهُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُو۟لِى ٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٤﴾
وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّن مَّآءٍ ۖ فَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ بَطْنِهِۦ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰٓ
أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾ لَّقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايَٰتٍ مُّبَيِّنَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ يَهْدِى مَن يَشَآءُ
إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُولُونَ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَآ أُو۟لَٰٓئِكَ

٤٣ - ألم تر - أيها النبى - أن الله يسوق بالريح سحابا ، ثم يضم بعضه إلى بعض ويجعله متراكما ، فترى المطر يخرج من خلال السحاب ، والله ينزل من مجموعات السحب المتكاثفة التى تشبه الجبال[1] فى عظمتها بردا ، كالحصى ينزل على قوم فينفعهم أو يضرهم تبعا لقوانينه وإرادته ولا ينزل على آخرين كما يريد الله فهو سبحانه الفاعل المختار ، ويكاد ضوء البرق الحادث من اصطكاك السحب يذهب بالأبصار لشدته ، وهذه الظواهر دلائل قدرة الله الموجبة للإيمان به[2] .

٤٤ - يغير الله أحوال الليل والنهار بالطول والقصر ، والبدء والانتهاء بدوران الفلك ، إن فى ذلك كله لعبرة لذوى العقول السليمة المتبصرة ، يؤمنون عن طريقها بالله .

٤٥ - الله خالق كل شىء ، وأبدع الأشياء بإرادته ، وخلق كل حى يدب من أصل مشترك هو الماء ، لذلك لا يخلو الحى منه ، ثم خالف بينها فى الأنواع والاستعدادات ووجوه الاختلاف الأخرى ، فمن الدواب نوع يزحف على بطنه كالأسماك والزواحف ، ومنها نوع يمشى على رجليه كالإنسان والطير ، ومنها نوع يمشى على أربع كالبهائم ، يخلق الله ما يشاء من خلقه على أية كيفية تكون للدلالة على قدرته وعلمه ، فهو المريد المختار ، وهو القادر على كل شىء .

٤٦ - لقد أنزلنا بالوحى آيات واضحة تبين الأحكام والعظات ، وتضرب الأمثال ، والله يوفق إلى الخير مَن يشاء من عباده الذين استعدوا للنظر فيها والإفادة منها .

---

(١) لا يعرف التشابه بين السحب والجبال إلا من يركب طائرة تعلو به فوق السحاب ، فيراها من فوقه كأنها الجبال والآكام ، وإذا لم تكن تلك الطائرات فى عصر النبى ﷺ فإنه يكون ذلك دليلا على أن هذا الكلام من عند الله الذى يعلم ما علا ، وما انخفض .

(٢) ﴿ ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله ، وينزل من السماء من جبال فيها من برد فيصيب به من يشاء ويصرفه عمن يشاء يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار﴾ :- تسبق هذه الآية الكريمة ركب العلم . فإنها تتناول مراحل تكوين السحب الركامية وخصائصها . وما عرف علميا فى العهد الأخير من أن السحب المطرة تبدأ على هيئة وحدات يتألف عدد منها فى مجموعات هى السحب الركامية : أى السحب التى تنمو فى الاتجاه الرأسى ، وترتفع قممها إلى علو ١٥ أو ٢٠ كيلو مترا ، فتبدو كالجبال الشامخة .

والمعروف علميا أن السحابة الركامية المطرة تمر بمراحل ثلاث هى :

١ - مرحلة الالتحام والنمو .

٢ - ثم مرحلة الهطول .

٣ - وأخيرا مرحلة الانتهاء .

كما أن هذه السحب هى - وحدها - التى تجود بالبرد وتشحن بالكهرباء . وقد يتلاحق حدوث البرق فى سلسلة تكاد تكون متصلة ، ٤٠ تفريغا فى الدقيقة الواحدة ، فيذهب ببصر الراصد من شدة الضياء . وهذا هو عين ما يحدث للملاحين والطيارين الذين يخترقون عواصف الرعد فى المناطق الحارة . وينجم عن فقد البصر هذا أضرار بليغة تشكل خطرا حقيقيا على أعمال الطيران وسط العواصف الرعدية . =

43. Разве ты не видишь (о пророк!), как Аллах гонит облака, рассеивая их ветром, потом соединяет их, превращая в тучу, из которой льётся дождь. Аллах низводит из клубов густых облаков, похожих в своём величии на горы, град, похожий на маленькие камешки, который падает на землю. И людям от него бывает или польза, или вред, которым Аллах поражает, кого пожелает, по Своим законам или отводит, от кого пожелает. Ведь Он - хвала Ему Всевышнему! - Творец и Избирающий. Блеск молний от столкновения облаков так силён, что чуть ли не лишает зрения. Эти явления - доказательства могущества Аллаха, обязывающие к вере в Него.

44. Аллах чередует дни и ночи, изменяя их продолжительность, начало и конец по обороту звёзд. В этом - назидание для тех, кто обладает здравым разумом, который ведёт его к вере в Аллаха.

45. Аллах сотворил всякую вещь по Своему желанию. Он сотворил все существа из общего начала - воды, - поэтому во всяком живом существе есть вода. И различил Аллах все живущие существа по типам и видам. Среди них есть такие, которые ползают на брюхе, как рыбы и пресмыкающиеся, и такие, которые ходят на двух, как человек и птицы, и такие, которые передвигаются на четырёх, как животные. Аллах создаёт любое существо из Своих тварей, как Он пожелает, чтобы оно служило доказательством Его могущества и знания. Поистине, Аллах - Владыка! Он властен и мощен над всякой вещью!

46. Мы ниспослали в Откровении ясные знамения, которые разъясняют наставления, проповеди, назидания, приводят притчи и дают примеры. Поистине, Аллах направляет к прямому пути того, кого Он захочет из Своих рабов, размышляющих над этим и стремящихся постигнуть истину.

بِٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا دُعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِن يَكُن لَّهُمُ
ٱلْحَقُّ يَأْتُوٓا۟ إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾ أَفِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ٱرْتَابُوٓا۟ أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُۥ ۚ بَلْ
أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا۟ سَمِعْنَا
وَأَطَعْنَا ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَخْشَ ٱللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴿٥٢﴾

٤٧ – والمنافقون يقولون بألسنتهم : آمنا بالله وبالرسول وأطعنا أوامرهما . وعند اختبارهم يعرض فريق منهم عن مشاركة المسلمين فى أعمال الخير كالجهاد وغيره ، بعد قولهم هذا ، وهؤلاء ليسوا بمؤمنين مخلصين ، ولا جديرين بإطلاق اسم المؤمنين عليهم .

٤٨ – ومن أحوالهم أنهم إذا طلبوا إلى التحاكم أمام الرسول بمقتضى ما أنزل الله ، ظهر نفاق بعضهم فرفضوا التحاكم إذا عرفوا أن الحق فى جانب خصومهم .

٤٩ – أما إذا عرفوا أن الحق فى جانبهم ، فهم يأتون إلى الرسول مسرعين ليحكم بينهم وبين خصومهم .

٥٠ – ولماذا يقفون هذا الموقف من التحاكم أمام الرسول ؟ . ألأنَّ نفوسهم مريضة بالعمى فلا تخضع لحكمك الحق ، أم لأنهم شكوا فى عدالة محمد ﷺ فى الحكم ؟ لا شىء من ذلك أصلا . ولكنهم هم الظالمون لأنفسهم ولغيرهم بسبب كفرهم ونفاقهم وعدولهم عن الحق .

٥١ – إنما كان القول الحق للمؤمنين الصادقين إذا دعوا إلى التحاكم بمقتضى ما جاء عن الله ورسوله أن يقولوا قابلين مذعنين : سمعنا دعوتك يا محمد ورضينا حكمك ، وهؤلاء يكونون أهل فلاح فى دنياهم وأخراهم .

٥٢ – ومن يطع الله ، ويرض بما يأمر به الرسول ﷺ ، ويخش ذات الله العلية ، ويستحضر جلاله ويتق غضبه ، فأولئك هم الفائزون برضا الله ومحبته ، ونعيم الجنة ، والفائزون بالخير المطلق .

= تعليق الخبراء على الآية ٤٥ .

﴿والله خلق كل دابة من ماء فمنهم من يمشى على بطنه ومنهم من يمشى على رجلين ومنهم من يمشى على أربع ، يخلق الله ما يشاء ، إن الله على كل شىء قدير ﴾ : الماء فى الآية الكريمة هو ماء التناسل أى المشتمل على الحيوانات المنوية ، والآية الكريمة لم تسبق فقط ركب العلم فى بيان نشوء الإنسان من النطفة ، كما جاء فى قوله تعالى : ﴿ فلينظر الإنسان مم خلق . خلق من ماء دافق ﴾ (٥ ، ٦ من سورة الطارق) بل سبقته كذلك فى بيان أن كل دابة تدب على الأرض خلقت كذلك بطريق التناسل من الحيوانات المنوية ، وإن اختلفت أشكال هذه الحيوانات المنوية وخصائصها فى كل نوع من أنواع هذه الدواب .

ومما تحتمله الآية من معان علمية أن الماء قوام تكوين كل كائن حى ، فمثلا يحتوى جسم الإنسان على نحو ٧٠ فى المائة من وزنه ماء .. أى أن الشخص الذى يزن ٧٠ كجم ، فى جسمه نحو ٥٠ كجم ماء . ولم يكن تكوين الجسم واحتوائه هذه الكمية الكبيرة من الماء معروفا مطلقا قبل نزول القرآن .

والماء أكثر ضرورة للإنسان من الغذاء .. فبينما الإنسان يمكنه أن يعيش ٦٠ يوما بدون غذاء ، لا يمكنه أن يعيش بدون الماء إلا من ٣ – ١٠ أيام على أقصى تقدير .

والماء أساس تكوين الدم والسائل اللمفاوى والسائل النخاعى وإفرازات الجسم كالبول والعرق والدموع واللعاب والصفراء واللبن والمخاط والسوائل الموجودة فى المفاصل . وهو سبب رخاوة الجسم وليونته ، ولو فقد الجسم ٢٠ فى المائة فإن الإنسان يكون معرضا للموت .

والماء يذيب المواد الغذائية بعد هضمها فيمكن امتصاصها ، وهو كذلك يذيب الفضلات من عضوية ومعدنية فى البول والعرق . وهكذا يكون الماء الجزء الأكبر والأهم من تكوين الجسم . ولذلك يمكن القول بأن كل كائن حى مخلوق من الماء .

47. Лицемеры говорят своими устами: “Мы уверовали в Аллаха и Его посланника и повинуемся их назиданиям". Но когда они подвергаются испытаниям, несмотря на эти слова, часть из них отказывается участвовать с мусульманами в сражении за Истину Аллаха и в других благих деяниях. Они неискренние верующие и не заслуживают называться верными праведниками.

48. Это видно из их поступков. Ведь когда их призывают к посланнику, чтобы он рассудил между ними по законам и наставлениям, ниспосланным Аллахом, часть из них проявляет лицемерие и отказывается от суда, если знает, что противная сторона права.

49. Но если они знают, что они правы, они спешат к посланнику, чтобы он рассудил между ними и их противниками.

50. Почему они так поступают относительно суда перед посланником? Разве это потому, что их сердца слепы, и они не подчиняются истинному, справедливому решению посланника или потому, что они сомневаются в справедливости суда Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует! Нет! Они сами несправедливы к себе и к другим из-за неверия, лицемерия и отказа от истины.

51. А искренние верующие, когда их призывают, чтобы их рассудили по законам и наставлениям, ниспосланным Аллахом Своему посланнику, говорят, повинуясь Аллаху и посланнику: "Мы слышим твой призыв, о Мухаммад, - да благословит его Аллах и приветствует! - и повинуемся твоему суждению". Эти счастливы в ближайшей жизни и в будущей жизни.

52. Те, кто повинуется Аллаху и тому, что повелевает посланник - да благословит его Аллах и приветствует, - и страшится Аллаха, и думает о Нём, Всевышнем, и избегает Его гнева - именно они получат благоволение Аллаха, блаженство рая и все блага.

* وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾ قُلْ
أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ
إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي
شَيْئًا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ

٥٣ – وأقسم المنافقون بالله أقصى ما يكون من أيمان مغلظة ، إنك يا محمد إن أمرتهم بالخروج معك للغزو أطاعوا ، قل لهم : لا تحلفوا فالأمور المطلوبة منكم معروفة لكم لا ينكرها أحد منكم ، ولا ينفى العلم بها أيمان تكذبون فيها ، وإن الله لمطلع تمام الاطلاع على كل ما يقع منكم ومجازيكم عليه .

٥٤ – قل لهم : أطيعوا الله وأطيعوا الرسول طاعة صادقة تدل عليها أعمالكم ، فإن أعرض المنافقون ولم يمتثلوا ، فإنما على محمد ما حمله الله من أمر التبليغ وليس مكلفا بهدايتهم ، وعليكم ما حملكم الله من التكليف والطاعة ، وستعاقبون إذا استمررتم على العصيان ، وإن تطيعوا الرسول تهتدوا إلى الخير ، وما عليه سوى التبليغ الواضح – أطعتم أم عصيتم – وقد بلغ .

٥٥ – وعد الله الذين صدّقوا بالحق وأذعنوا له منكم ، وعملوا الأعمال الصالحة وعدا مؤكدا أن يجعلهم خلفاء لمن سبقوهم وارثين لهم فى الحكم والولاية فى الأرض ، كما كان الشأن فيمن سبقوهم . وأن يمكن لهم الإسلام الذى ارتضاه دينا لهم ، فتكون لهم المهابة والسلطان ، وأن يبدل حالهم من خوف إلى أمن بحيث يعبدوننى مطمئنين ، لا يشركون معى أحدا فى العبادة . ومن اختاروا الكفر بعد هذا الوعد الصادق ، أو ارتدوا عن الإسلام فأولئك هم الخارجون المتمردون الجاحدون .

53. Лицемеры клялись Аллахом, сильнейшей клятвой, что если ты, о Мухаммад - да благословит его Аллах и приветствует! - призовёшь их выйти с тобой на сражение, они повинуются. Скажи им (о Мухаммад!): "Не клянитесь! Вы хорошо знаете, какое повиновение требовалось от вас, и никто из вас не отрицает этого, и ваши ложные клятвы не отрицают ваше знание этого. Аллах сведущ в том, что вы делаете, и накажет вас за ваши дела".

54. Скажи им (о Мухаммад!): "Повинуйтесь Аллаху и посланнику так искренне, чтобы ваши деяния доказывали это. Если же лицемеры отвернутся и не повинуются, то на Мухаммаде - да благословит его Аллах и приветствует! - лежит обязанность - только призывать к истине, а не отвечать за их повиновение. На вас же лежит возложенная на вас обязанность - повиновение Аллаху. Если вы будете продолжать не повиноваться Аллаху и отвергать призыв к Истине Аллаха, вы подвергнетесь наказанию. Если вы повинуетесь посланнику, вы будете на прямом пути истины. Обязанность посланника - передать вам Писание Аллаха ясно и чётко и призывать вас к Его Истине. Будете ли вы слушать и повиноваться или будете ослушниками, не повинующимися Аллаху, посланник выполнил свою задачу - ясно передал вам ниспосланное Откровение.

55. Аллах дал тем из вас, которые уверовали, повиновались Аллаху и вершили добрые деяния, твёрдое обещание - сделать их наследниками на земле тех, кто был до них, и утвердить ислам, который Он избрал для них религией, и они тогда будут обладать величием и властью, и Аллах даст им взамен страха безопасность, чтобы они поклонялись Мне спокойно, без страха и не поклонялись другим божествам наряду со Мной. Те, которые после этого истинного обещания окажутся неверными или отступят от ислама, будут отступниками, нечестивыми грешниками.

تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لِيَسْتَأْذِنكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ
تَضَعُونَ ثِيَابَكُم مِّنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ
طَوَّافُونَ عَلَيْكُم بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنكُمُ

٥٦ - وأقيموا الصلاة كاملة الأركان فى خشوع وخضوع بحيث تكون مانعة من الفحشاء والمنكر ، وأعطوا الزكاة لمستحقيها . وأطيعوا الرسول فى سائر ما يأمركم به ليكون لكم رجاء فى رحمة الله ورضوانه .

٥٧ - لا تظن ــ أيها النبى ــ أن الكافرين سيعجزون الله عن أخذهم بذنوبهم ، أو تمكين أهل الحق من رقابهم فى أى مكان من الأرض ، بل إنه القادر ، فمصيرهم يوم القيامة هو النار وبئس المصير مصيرهم .

٥٨ - يأيها الذين آمنوا ، يجب أن تأمروا عبيدكم وصبيانكم الذين لم يصلوا إلى حد البلوغ ألا يدخلوا عليكم إلا بعد الاستئذان فى ثلاثة أوقات ، وهى قبل صلاة الفجر[1] وحين تتخففون من ثيابكم وقت القيلولة ، ومن بعد صلاة العشاء عند الاستعداد للنوم فهذه الأوقات يتغير فيها نظام اللبس باستبدال ثياب النوم بثياب اليقظة ، ويبدو من عورات الجسم ما لا ينبغى رؤيته ، ولا حرج عليكم ولا عليهم فى الدخول بغير استئذان فى غير هذه الأوقات ، لأن العادة جرت بأن يتردد فيها بعضكم على بعض لقضاء المصالح ، وبمثل هذا التوضيح يوضح الله لكم آيات القرآن لبيان الأحكام ، والله سبحانه واسع العلم عظيم الحكمة ، يعلم ما يصلح لعباده ويشرع لهم ما يناسبهم ويحاسبهم على أعمالهم .

---

(١) ﴿ يأيها الذين آمنوا ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم والذين لم يبلغوا الحلم منكم ثلاث مرات من قبل صلاة الفجر ، وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء ثلاث عورات لكم ليس عليكم ولاعليهم جناح بعدهن طوافون عليكم بعضكم على بعض ، كذلك يبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم ﴾ : هذه الآية الشريفة إحدى الآيات التى توجه أنظار الناس إلى اللياقة الاجتماعية فى محيط الأسرة ، وذلك أن اندماج المماليك - الخدم - والصبيان فى أسرهم ، قد يتجاوز بهم الاحتشام فى المخالطة ، فيدخلون على الغير دون استئذان فى الأوقات المذكورة فى الآية . ونظرا لأنها أوقات خلوة وحرية شخصية وتحلل من لباس الحشمة ، عنيت الآية بتشريع الاستئذان فى تلك الأوقات بالنسبة لمن ذكرتهم من المماليك والصبيان ، حتى لا يطلعوا على ما يعتبر سرا لا يستساغ اطلاعهم عليه ، إذ هو كالعورة التى ينبغى سترها ، وفى هذا توجيه لأعضاء الأسرة إلى اتخاذ الملابس اللائقة بمقابلة بعضهم البعض ، حتى تظل كرامتهم مصونة ، وحريتهم مكفولة وآدابهم مرعية ، والقرآن جدير بهذه التوجيهات التى تنهض بأخلاقنا إلى المستوى الرفيع .

56. Выстаивайте обрядовую молитву регулярно и полностью, богобоязненно и смиренно, и она защитит вас от распутства и грехов. Давайте очистительную милостыню (закят) тому, кто её заслуживает. Повинуйтесь посланнику во всём, что он от вас требует. Может быть, будет на вас милость и благоволение Аллаха!

57. Не думай, о пророк, что те, которые не уверовали, смогут чем-нибудь ослабить дело Аллаха на земле и что Он не накажет их за грехи, и что Он не сможет помочь верным одержать победу над нечестивцами в любом месте на земле. Поистине, Аллах Всемогущ! И в Судный день они будут в огне ада - самом мерзком пристанище. Какая плачевная судьба - их судьба!

58. О вы, которые уверовали, вам следует приказать своим рабам и слугам, не достигшим зрелости, не входить к вам без разрешения в трёх определённых случаях: до утренней молитвы на заре (фаджр), когда вы снимаете свою одежду в полуденный час и после вечерней молитвы (ишаа), когда вы готовитесь ко сну. В этих трёх случаях порядок одевания изменяется: снимают одежду, в которой спали, и надевают повседневную одежду, и наоборот. В это время обнажается тело человека, и могут открыться те места, на которые нельзя смотреть. Нет греха в том, что они к вам будут входить без разрешения в другое время дня, кроме трёх вышеупомянутых случаев, ибо обычно вы ходите друг к другу, чтобы выполнять свои дела и разрешать свои задачи. Так Аллах разъясняет вам айаты Корана, чтобы вы знали наставления Аллаха и его законы. Поистине, Аллах - Сведущий, Знающий, Обладатель великой мудрости! Ведь Он знает, что подходит Его рабам и воздаст им за их деяния.

ٱلْحُلُمَ فَلْيَسْتَـْٔذِنُوا۟ كَمَا ٱسْتَـْٔذَنَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ءَايَٰتِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَٱلْقَوَٰعِدُ
مِنَ ٱلنِّسَآءِ ٱلَّٰتِى لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَٰتٍۭ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ
خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَّيْسَ عَلَى ٱلْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى ٱلْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى ٱلْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰٓ
أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا۟ مِنۢ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ ءَابَآئِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَٰنِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَٰتِكُمْ
أَوْ بُيُوتِ أَعْمَٰمِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَٰلِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَٰلَٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُۥٓ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا۟ جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ مُبَٰرَكَةً طَيِّبَةً ۚ
كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾ إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَإِذَا كَانُوا۟

٥٩ - وإذا وصل صبيانكم حد البلوغ وجب عليهم أن يستأذنوا للدخول فى كل بيت ، وفى جميع الأوقات ، كما وجب ذلك على الذين بلغوا من قبلهم ، وبمثل هذا التوضيح يوضح الله لكم آياته التى أنزلها ، والله سبحانه واسع العلم ، عظيم الحكمة ، يعلم ما يصلح لعباده ويشرّع لهم ما يناسبهم ويحاسبهم على أعمالهم .

٦٠ - والنساء الطاعنات فى السن اللاتى لا يطمعن فى الزواج ، لا مؤاخذة عليهن إذا تخففن من بعض الملابس ، بحيث تكون غير مظهرات زينة أمر الله بإخفائها من أجسامهن ، ولكن استعفافهن بالاستتار الكامل خير لهن من التخفف ، والله سميع لقولهن عليم بفعلهن وقصدهن ومجازيهن على ذلك .

٦١ - ليس على أصحاب الأعذار كالأعمى والأعرج والمريض حرج ، بل ولا عليكم أيها الأصحاء حرج فى أن تأكلوا من بيوت أولادكم فهى بيوتكم ، ولا أن تأكلوا من بيوت آبائكم أو أمهاتكم أو إخوانكم أو أخواتكم أو بيوت أعمامكم أو عماتكم أو أخوالكم أو خالاتكم ، أو البيوت التى وكل إليكم التصرف فيها ، أو بيوت أصدقائكم المخالطين إذا لم يكن فيها حرمات ، وذلك كله إذا عُلِم سماح رب البيت بإذن أو قرينة ، وليس عليكم جناح فى أن تأكلوا مجتمعين أو منفردين ، فإذا دخلتم بيوتا فحيوا بالسلام أهلها الذين هم قطعة منكم بسبب اتحاد الدين أو القرابة فهم كأنفسكم ، وهذه التحية تحية مشروعة مباركة بالثواب وفيها تطييب للنفوس وعلى هذا النحو يوضح الله لكم الآيات لتعقلوا ما فيها من العظات والأحكام وتفهموها وتعملوا بها .

59. Когда ваши дети достигнут зрелости, они должны, прежде чем войти в чужой дом, попросить разрешения, как делали это те, кто достиг зрелости до них. Так Аллах разъясняет вам ниспосланные Им айаты. Он Мудр и знает, что полезно Его рабам, и даёт им подходящие для них наставления, и воздаст им за их деяния.

60. На престарелых женщинах, которые не стремятся к браку, не будет греха, если они будут одеваться свободнее, не показывая мест, на которых они носят украшения, и прикрывая их, как повелел Аллах Но лучше для них - быть воздержанными, закрывая запретное, по приказу Аллаха. Поистине, Аллах - Слышащий! Он слышит их речи и знает их деяния и намерения, и воздаст им за это.

61. Нет греха на слепом, на хромом, на больном, ни на вас самих, чтобы вы ели в домах ваших детей - это ваши дома -или ваших родителей, ваших братьев и сестёр, или в домах ваших дядей и тёток по отцовской линии или в домах ваших дядей и тёток по материнской линии, или в домах, в которых вам поручено распоряжаться, или в домах ваших друзей, если на то есть разрешение хозяина и если там нет женщин, на которых вам можно по религиозным законам жениться. Нет греха, если вы будете есть все вместе или отдельно. Когда вы входите в дома, приветствуйте их обитателей. Ведь они - часть вас в результате единства религии и родства. Это приветствие - благословенное и благое, и за него вы получите награду. Так Аллах разъясняет айаты Писания, чтобы вы раздумывали над Его наставлениями и законами, постигли это Писание и поступали соответственно с его наставлениями.

مَعَهُۥ عَلَىٰٓ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا۟ حَتَّىٰ يَسْتَـْٔذِنُوهُ ۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسْتَـْٔذِنُونَكَ أُو۟لَـٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۚ فَإِذَا
ٱسْتَـْٔذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُمُ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا۟ دُعَآءَ ٱلرَّسُولِ
بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمْ
فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ

٦٢ - إن المؤمنين الصادقين هم الذين آمنوا بالله ورسوله ، ولم يتركوا الرسول وحده فى أمر مهم يتطلب اجتماعهم كالجهاد ، إلا بعد أن يستأذنوه فى الانصراف ويسمح لهم به ، إن الذين يقدرونك ــ أيها النبى ــ حق قدرك ، ويدركون خطر الاجتماع فلا ينصرفون إلا بعد موافقتك ، وهم الصادقون فى إيمانهم بالله ورسوله ، فإذا استأذنك هؤلاء لقضاء بعض مصالحهم فأذن بالانصراف لمن تشاء منهم ، إذا رأيت من الدلائل أنه فى حاجة ماسة إلى الانصراف ، ولا يهم الاجتماع وجوده ، ومع ذلك اطلب المغفرة لهم من الله على انصرافهم الذى ما كان يليق أبدا ، إن الله واسع المغفرة والرحمة .

٦٣ - احرصوا على احترام دعوة الرسول لكم إلى الاجتماع للأمور الهامة ، واستجيبوا لها ، ولا تجعلوها كدعوة بعضكم لبعض فى جواز التهاون فيها والانصراف عنها ، ولا تنصرفوا إلا بعد الاستئذان والموافقة ، وفى أضيق الحدود وأشد الضرورات . فالله سبحانه يعلم من ينصرفون بدون إذن مختفين بين الجموع حتى لا يراهم الرسول ، فليحذر المخالفون عن أمر الله أن يعاقبهم سبحانه على عصيانهم بمحنة شديدة فى الدنيا كالقحط والزلزال ، أو بعذاب شديد الإيلام قد أعد لهم فى الآخرة وهو النار ..

62. Истинные верующие - те, которые уверовали в Аллаха и Его посланника и не оставляли посланника без его позволения в любом общем деле, которое требовало их участия в собрании, например, джихад. Те, кто оценивал пророка по достоинству, понимая серьёзность такого собрания, не уходили, пока ты (о пророк!) не разрешишь им, - искренне верят в Аллаха и в Его посланника. Если кто-либо из них попросит у тебя (о пророк!) позволения уйти, чтобы совершить свои дела, дай разрешение, кому пожелаешь, если увидишь, что ему действительно надо уйти и что его отсутствие не ослабит собрания. Вместе с тем, проси прощения им у Аллаха за то, что они ушли, а им не следовало бы этого делать. Поистине, Аллах - Прощающий и Милосердный.

63. Отвечайте на приглашение пророка собраться для обсуждения важных вопросов и отзывайтесь сразу на это приглашение, и не равняйте приглашения пророка с приглашением друг к другу, которое можно пропустить или отказаться. Не уходите с собрания без разрешения: только при необходимости можете попросить позволения уйти. Аллах - хвала Ему Всевышнему! - знает тех из вас, которые уходят тайком, без разрешения, скрываясь в толпе, чтобы не увидел пророк. Пусть берегутся те, которые нарушают наставления и приказ Аллаха, чтобы Он - хвала Ему Всевышнему! - не наказал их за неповиновение, подвергнув большому бедствию в земном мире, например, голоду или землетрясению, а в дальней жизни они подвергнутся мучительной каре - адскому огню.

فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

٦٤ - تنبهوا ــ أيها الناس ــ إلى أن الله ــ وحده ــ هو مالك السموات والأرض وما فيها ، يعلم ما أنتم عليه من الكفر والإسلام والعصيان والطاعة ، فلا تخالفوا عن أمره ، وسيخبر الناس عند رجوعهم إليه يوم القيامة بكل ما عملوا فى الدنيا وسيجازيهم عليه ، لأنه محيط بكل شىء علما ..

64. Да будет вам известно, что Аллаху Единому принадлежат небеса и земля, а также всё, что на них. Он знает ваши мысли - будь вы неверные и неповинующиеся или верные и повинующиеся. Не нарушайте Его приказов и наставлений. Аллах сообщит людям, когда они все вернутся к Нему в Судный день, о том, что они сделали в ближайшей жизни, и воздаст им за это. Поистине, Аллах ведает о всякой вещи!

(٢٥) سورة الفرقان مكية

إلا الآيات ٦٨ ، ٦٩ ، ٧٠ فمدنية
وآياتها ٧٧ نزلت بعد يس

بسم الله الرحمن الرحيم

عدد آيات هذه السورة سبع وسبعون آية ، كلها مكية إلا الآيات رقم ٦٨ ، ٦٩ ، ٧٠ .

بدأت السورة ببيان منزِلَة القرآن وسعة ملك منزله ، الذى له ملك السموات والأرض ، ومع عظيم سلطانه يتخذ المشركون من دونه الأوثان ، ويكذبون بالقرآن ، وينكرون رسالة الرسول ﷺ ، بحجة أنه بشر ، يأكل الطعام ، ويمشى فى الأسواق ، ويطلبون تعنتا ملائكة تبلغهم الرسالة ، ولو جعلهم ملائكة لجعلهم رجالا - يمكنهم التفاهم مع البشر - فيبقى الالتباس ، وقد اعترضوا على نزول القرآن منجما ، فأجيبوا بحكمة ذلك ، واتبع هذا العناد بأمثلة معبرة عن الأنبياء وأقوامهم ، لكن القوم اتبعوا أهواءهم ، فصاروا كالأنعام أو أضل سبيلا . وجاءت الآيات الكونية الدالة على كمال قدرته تعالى ، الموجهة إلى النظر والمعرفة ، وختمت السورة بأوصاف المؤمنين الذين يرثون غرف الجنة العالية ، ويلقون فيها تحية وسلاما .

(25) АЛЬ-ФУРКАН
(Мекканская сура)
РАЗЛИЧЕНИЕ

Во имя Аллаха Милостивого, Милосердного!

Данная сура состоит из 77 айатов. Все айаты этой суры ниспосланы в Мекке, за исключением 68 -го,69 -го и 70 -го айатов.

Сура начинается с разъяснения непреходящей ценности Корана и всеобъемлющей власти ниспославшего его Аллаха над небесами и землёй.

Несмотря на величие Аллаха - хвала Ему, - многобожники поклонялись идолам наравне с Аллахом, опровергая Коран и отрицая послание пророка Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует, - говоря, что он человек, который ест и ходит на рынки в поисках заработка, и требовали, чтобы Послание им передали ангелы. А если бы Аллах сделал посланниками Своих ангелов, Он бы послал их в виде мужчин, которые могут говорить с людьми, и тогда всё равно бы была неясность и путаница. Они (многобожники) возражали и против того, что Коран ниспосылался постепенно. На это они получили ответ, объясняющий мудрость этого, и им были приведены примеры и притчи о пророках и их народах. Но эти народы повиновались только своим страстям, уподобившись скоту, и даже стали хуже скота. В ряде айатов суры о Вселенной - знамения о Всемогуществе Аллаха Всевышнего, которые наводят на размышления, разумение и постижение.

В конце суры перечисляются качества верующих, благодаря которым они будут на наивысших местах в раю, где царят только приветствие и мир.

تَبَارَكَ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِۦ لِيَكُونَ لِلْعَٰلَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾ ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ
وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٌ فِى ٱلْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ فَقَدَّرَهُۥ تَقْدِيرًا ﴿٢﴾ وَٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً لَّا يَخْلُقُونَ
شَيْـًٔا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوٰةً وَلَا نُشُورًا ﴿٣﴾ وَقَالَ ٱلَّذِينَ
كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ إِفْكٌ ٱفْتَرَىٰهُ وَأَعَانَهُۥ عَلَيْهِ قَوْمٌ ءَاخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَآءُو ظُلْمًا وَزُورًا ﴿٤﴾ وَقَالُوٓا۟ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ

١ - تعالى أمر الله وتزايد خيره ، هو الذى نزل بالقرآن فارقا بين الحق والباطل على عبده ــ محمد ــ ﷺ ، ليكون نذيرا به مبلغا إياه إلى العالمين .

٢ - هو سبحانه الذى يملك ــ وحده ــ السموات والأرض ، والمنزه عن اتخاذ الولد ، ولم يكن له أى شريك فى ملكه ، وقد خلق كل شىء وقدَّره تقديرا دقيقا بنواميس تكفل له أداء مهمته بنظام(١) .

٣ - ومع ذلك ترك الكافرون عبادته ، واتخذوا آلهة يعبدونها من دون الله من أصنام وكواكب وأشخاص وهم لا يستطيعون أن يخلقوا شيئا ما ، وهم مخلوقون لله ، ولا يملكون دفع الضر عن أنفسهم ولا جلب خير لها ، ولا يملكون إماتة أحد ولاإحياءه ، ولا بعث الأموات من قبورهم ، وكل من لا يملك شيئا من ذلك لا يستحق أن يعبد ، وما أجهل مَن يعبده ، والمستحق للعبادة وحده هو مالك كل هذا .

٤ - وطعن الكفار فى القرآن وقالوا : إنه كذب اخترعه محمد من عند نفسه ونسبه إلى الله ، وساعده فى اختراعه جماعة آخرون من أهل الكتاب ، فارتكب الكفار بقولهم هذا ظلما فى الحكم واعتداء على الحق ، وجاءوا بزور لا دليل عليه ، لأن من أشاروا إليهم من أهل الكتاب لسانهم أعجمى ، والقرآن لسان عربى مبين .

---

(١) ﴿ الذى له ملك السموات والأرض ولم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك ، وخلق كل شىء فقدره تقديرا ﴾ : أثبت العلم الحديث أن كل الموجودات تسير بحكم تكوينها وما يجرى عليها من تطورات مختلفة وفق نظام دقيق ثابت لا يقدر عليه إلا خالق قدير مبدع . فمن حيث التكوين فقد تبين أن جميع هذه الموجودات والمخلوقات على اختلاف أشكالها وتباين صورها تتألف من اتحاد عناصر محدودة العدد ، إذ يبلغ عددها قرابة المائة عنصر ، منها ٩٦ معروفة حتى الآن ، وهى تتدرج فى صفاتها الطبيعية والكيميائية وأوزانها الذرية وتبدأ بالعنصر رقم « ١ » وهو الأيدروجين ووزنه الذرى « ١ » وتنتهى - حتى الآن - بالعنصر رقم ٩٦ وهو عنصر اليوريوم ووزنه الذرى غير معلوم ، وآخر عنصر علم وزنه الذرى هو اليورانيوم ويبلغ وزنه الذرى ٢٣٨,٥٧ ، وتسير هذه العناصر فى اتحادها لتكوين المركبات حسب قوانين ثابتة لا تحيد عنها ، وكذلك النبات والحيوان فإن كلا منها ينقسم إلى أسر وفصائل وأنواع تتدرج صفاتها فى مدارج الرقى من الكائنات الحية ذات الخلية الواحدة مثل الميكروبات إلى كائنات متعددة الخلايا إلى الإنسان وهو أكملها . ولكل من هذه الأنواع صفات خاصة تتوارث فيما بينها جيلا بعد جيل وكل هذا يسير تبعا لقوانين ونظم ثابتة دقيقة تنبىء بجلاء ووضوح عن عظمة الخالق وقدرته . فسبحانه وتعالى عما يشركون .

1. Да возвысится дело Аллаха и возвеличится Его милость! Он ниспослал Коран - Различение между истиной и ложью Своему рабу Мухаммаду - да благословит его Аллах и приветствует, - чтобы он стал увещевателем, передающим Коран обитателям миров.

2. Аллаху - хвала Ему Всевышнему! - принадлежит власть над небесами и землёй. Он безупречен, и не брал Он себе ребёнка, и нет у Него соучастников в Своём царстве. Аллах сотворил всякую вещь и соразмерил её точной мерой по законам, по которым всё существует в соответствии с идеальным порядком.

3. Несмотря на это, неверные не стали поклоняться Аллаху, а вместо Него поклонялись другим богам - идолам, звёздам или людям, которые не могут сотворить ничего, а сами сотворены Аллахом, не могут ни отвратить от себя вреда, ни принести себе пользы. Они никого не могут ни оживить, ни умертвить, ни воскресить из могилы после смерти. Кто ничего не может сотворить и не властен ни над чем, не заслуживает поклонения. До чего же невежествен тот, кто поклоняется таким богам! Только Тот, кто властен над каждой вещью, достоин, чтобы Ему Единому поклонялись!

4. Те, которые не уверовали, отрицая Коран, сказали: "Коран - ложь, которую измыслил сам Мухаммад, приписав его Аллаху, и помогли ему в этом другие люди из обладателей Писания. Говоря так, неверные были несправедливы в своих суждениях и искажали истину. Они возводят ложь, не имея на это никаких оснований. Те, которых они упомянули из обладателей Писания, не говорили по-арабски, а Коран ниспослан на ясном арабском языке.

ٱكْتَتَبَهَا فَهِىَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٥﴾ قُلْ أَنزَلَهُ ٱلَّذِى يَعْلَمُ ٱلسِّرَّ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ غَفُورًا
رَّحِيمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوا۟ مَالِ هَٰذَا ٱلرَّسُولِ يَأْكُلُ ٱلطَّعَامَ وَيَمْشِى فِى ٱلْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَآ أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُۥ
نَذِيرًا ﴿٧﴾ أَوْ يُلْقَىٰٓ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُۥ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ ٱلظَّٰلِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾

٥ - وقالوا عن القرآن أيضا : إنه أكاذيب السابقين سطَّروها فى كتبهم ، ثم طَلب منهم أن تُكتب له وتُقرأ عليه على الدوام صباحا ومساء حتى يحفظها ويقولها .

٦ - قل لهم ــ أيها النبى ــ : إن القرآن أنزله الله الذى يعلم الأسرار الخفية فى السموات والأرض ، وقد أودعها فى القرآن المعجز دليلا على أنه وحيه سبحانه ، إن الله واسع المغفرة والرحمة ، يتجاوز عن العاصين إذا تابوا ولا يعجل بعقوبتهم .

٧ - وسَخِروا من محمد فقالوا : أى شىء يمتاز به هذا الذى يزعم أنه رسول حتى إنه يأكل الطعام كما نأكل ، ويتردد فى الأسواق لكسب عيشه كما يفعل سائر البشر ؟ لو كان رسولا لكفاه الله ذلك ، ولسأل ربه أن ينزل له ملكا من السماء يساعده على الإنذار والتبليغ ويصدقه فى دعواه فنؤمن به .

٨ - وهلا سأل أن يكفيه مؤونة التردد على الأسواق فيلقى إليه كنزا من السماء ينفق منه ، أو يجعل له حديقة يقتات من ثمارها ؟ وقال كبار الكافرين الذين ظلموا أنفسهم بالكفر صادين الناس عن الإيمان بمحمد ، ومحاولين تشكيك المؤمنين : ما تتبعون إلا رجلا مسحورا عقلُه ، فهو يهذى بما لا حقيقة له .

5. Неверные говорили также: "Коран это - ложь и сказки прежних поколений, которые они написали в своих книгах, а он (Мухаммад) просил, чтобы их записали и читали ему утром и вечером, чтобы он их запомнил и передавал".

6. Скажи им (о пророк!), что Коран ниспослан Аллахом, который знает тайное и явное в небесах и на земле, и Он низвёл это в чудесном, неподражаемом Коране в доказательство того, что Коран является Откровением, ниспосланным от Аллаха - хвала Ему! Поистине, Аллах - Прощающий, Милосердный! Он прощает тех, кто кается из неповинующихся, и не спешит с их наказанием.

7. Неверные смеялись над Мухаммадом - да благословит его Аллах и приветствует! - и говорили, издеваясь над ним: "Чем отличается этот человек, который утверждает, что он посланник, от нас? Ведь он ест так же, как и мы едим, и ходит по рынкам с одного места на другое, чтобы заработать на хлеб, как делают и все другие люди. Если бы он был посланником, то могущества Аллаха хватило бы, чтобы удовлетворить его нужды или ниспослать ангела, чтобы тот помогал ему в увещевании и передаче Послания и подтвердил бы его призыв. Тогда бы мы уверовали в его послание и призыв.

8. Или помолился бы Аллаху, чтобы Он помог ему освободиться от хождения по рынкам, или бросил бы Аллах ему сокровище с неба на расходы, или даровал бы ему сад, из плодов которого он бы питался. Главы неверных, которые были несправедливыми к себе своим неверием и нечестием, отклоняя людей от веры в посланника Аллаха Мухаммада - да благословит его Аллах и приветствует! - и стараясь посеять сомнения среди верующих, сказали: "Вы следуете лишь за человеком с околдованным умом, который бредит измышлениями и ложью".

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾
إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾
لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ

٩ - انظر ــ أيها النبى ــ كيف ضربوا لك الأمثال ، فمثلوك مرة بمسحور ، وأخرى بمجنون ، وثالثة بكذاب ، ورابعة بتلقى القرآن عن أعاجم ، إنهم بذلك قد ضلوا طريق الحق ، والمحاجة الصحيحة فلا يجدون إليهما سبيلا .

١٠ - تعالى الله وتزايد خيره ، هو الذى إن شاء جعل لك فى الدنيا أحسن مما اقترحوا ، فيجعل لك فيها مثل ما وعدك فى الآخرة من جنات كثيرة تجرى الأنهار فى جنباتها وخلال أشجارها ، ومن قصور مشيدة .

١١ - والحقيقة أنهم جاحدون بكل آية ، لأنهم كذَّبوا بالبعث ويوم القيامة ، فهم لهذا يتعللون بهذه المطالب ليصرفوا الناس إلى باطلهم ، وقد أعددنا لمن كذب بيوم القيامة نارا مستعرة شديدة الالتهاب .

١٢ - إذا رأوها ورأتهم من بعيد سمعوا لها صوتا متغيظا متحفزا لإهلاكهم ، وفيه مثل الزفرات التى تخرج من صدر متغيظ علامة على ما هى عليه من شدة .

١٣ - وإذا ألقوا فى مكان ضيق منها يتناسب مع جرمهم وهم مقرونة أيديهم إلى أعناقهم بالأغلال ، نادوا هناك : طالبين تعجيل هلاكهم ليستريحوا من هول العذاب .

١٤ - فيقال لهم توبيخا وسخرية : لا تطلبوا هلاكا واحدا بل اطلبوه مرارا ، فلن تجدوا خلاصا مما أنتم فيه ، وإن أنواع عذابهم كثيرة .

9. Смотри (о пророк!), как они говорят о тебе: один раз уподобляют тебя очарованному человеку, в другой раз - сумасшедшему, в третий раз - лжецу, а в четвёртый раз говорят, что ты получил Коран от неговорящих по-арабски. Таким образом, они уже сбились с прямого пути истины и, отклонившись от правильных доводов, настолько впали в заблуждение, что не найдут себе дороги к правильному пути Аллаха.

10. Да возвысится Аллах и увеличится Его милость! Если Он пожелает, дарует тебе в земном мире лучшее, чем предлагают неверные. Он, если пожелает, дарует тебе, подобное тому, что обещал в дальней жизни, - много садов, по которым текут реки, и устроит тебе великолепные дворцы.

11. В действительности они отвергают всё это, потому что отвергают воскресение и Судный день. Поэтому они выдвигают эти требования, чтобы отвернуть людей от истинного пути и направить их по ложному пути. Для тех, кто опровергал и не верил в Судный день, Мы уготовили адский огонь, горящий жарким пламенем.

12. Когда они увидят этот огонь, и огонь увидит их издалека, они услышат страшный яростный рёв, готовый погубить их; и в нём, словно всхлипы, которые выходят из груди разгневанного человека, свидетельствуя, как сильна его ярость.

13. Когда неверные будут брошены там в тесное место - в соответствии с их преступлениями - с руками, привязанными к шее, они будут молить ускорить их гибель, чтобы облегчить эти страшные мучения.

14. Тогда им скажут с упрёком и издёвкой: "Не просите одну гибель, а просите много гибелей. Ведь нет спасения от того, в чём вы находитесь, и есть ещё много видов наказания".

لَهُمْ جَزَآءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾ لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَآءُونَ خَٰلِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔولًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ
مِن دُونِ ٱللَّهِ فَيَقُولُ ءَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِى هَٰٓؤُلَآءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا۟ ٱلسَّبِيلَ ﴿١٧﴾ قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ مَا كَانَ يَنۢبَغِى لَنَآ أَن
نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَآءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَءَابَآءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا۟ ٱلذِّكْرَ وَكَانُوا۟ قَوْمًۢا بُورًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا
تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ

١٥ - قل ــ يأيها النبى ــ للكافرين : أهذا المصير الذى أوعد به الكافرون خير أم الجنة الدائم نعيمها ، والتى وعد المؤمنون الأتقياء بأن تكون لهم ثوابا ومصيرا يصيرون إليه بعد البعث والحساب ؟ .

١٦ - لهم فيها ما يرغبون وينعمون به نعيما دائما دون انقطاع ، وكان هذا النعيم وعدا من الله لهم ، سألوا ربهم تحقيقه فأجابهم إلى ما سألوه ، لأن وعده لا يتخلف .

١٧ - واذكر للعظة يوم يَحشر الله المشركين للحساب فى يوم القيامة مع مَن عبدوهم فى الدنيا من دون الله ، كعيسى وعزير والملائكة ، فيسأل الله المعبودين : أأنتم الذين أضللتم عبادى فأمرتموهم بأن يعبدوكم ، أم هم الذين ضلوا السبيل باختيارهم فعبدوكم ؟.

١٨ - فيكون جوابهم : تنزَّهت وتقدَّست ، ما كان يحق لنا أبدا أن نطلب من دونك وليا ينصرنا ويتولى أمرنا ، فكيف مع هذا ندعو أحدا أن يعبدنا دونك ؟ ولكن السبب فى كفرهم هو إنعامك عليهم بأن متّعتهم طويلا بالدنيا هم وآباؤهم ، فأطغاهم ذلك ونسوا شكرك والتوجه إليك - وحدك - بالعبادة ، وكانوا بذلك الطغيان والكفر قوما مستحقين للهلاك .

١٩ - فيقال للعابدين المشركين : لقد كذَّبكم مَن عبدتموهم فيما زعمتم من إضلالهم إياكم . فأنتم اليوم إلى العذاب صائرون ، لا تملكون حيلة لصرفه عنكم ولا تجدون نصرا من أحد يخلصكم منه ، وليعلم العباد جميعا أن من يظلم نفسه بالكفر والطغيان كما فعل أولئك فإننا نعذِّبه عذابا شديداً .

15. Скажи (о пророк!) неверующим: "Что лучше - эта судьба, обещанная неверным, или вечный рай благоденствия, который Аллах обещал богобоязненным и которые будут в нём после воскресения и расчёта?"

16. В этих садах благоденствия у них будет всё, что они хотят, и будут они вечно наслаждаться благами. Всё это блаженство, о котором они просили, - обещание Аллаха им в ответ на их просьбу. Поистине, обещание Аллаха никогда не нарушается!

17. Скажи им (о Мухаммад!) как назидание и поучение. Аллах соберёт всех многобожников для расчёта в День воскресения вместе с теми, кому они поклонялись в ближайшей жизни помимо Аллаха, как Ису (Иисуса), Узайра и ангелов. Аллах спросит тех, кому они поклонялись: "Это вы, кто сбил Моих рабов с прямого пути и повелел им поклоняться вам, или же они сами впали в заблуждение и сбились с прямого пути, поклоняясь вам?"

18. Они ответят: "Хвала Тебе - Аллаху Безупречному! У нас не было никакого права брать вместо Тебя покровителя и заступника. Как же мы могли призывать кого-либо поклоняться нам вместо Тебя? Ты долго одаривал их и их отцов благами в ближайшей жизни, и это усилило их жестокосердие, и они забыли о чести и справедливости, забыли благодарить Тебя и поклоняться Тебе Единому. Своим нечестием и несправедливостью они заслуживают гибель".

19. Тогда Аллах скажет многобожникам: "Те, которым вы поклонялись, обличают вас во лжи за то, что вы говорите, что они сбили вас с прямого пути. Теперь вы будете наказаны и не сможете отвратить этого наказания, и не найдёте помощи от заступника для спасения вас. Пусть все люди знают, что тех, кто неправеден - как те люди, - Мы подвергнем мучительной каре".